पुस्तक मिलने का पता :—

अशोक, शोप नं० ४४
९बी, एस्प्लेनेड रो ईस्ट
धर्मतल्ला मार्केट
कलकत्ता-७०००६९

❀

प्रकाशकुमार अशोककुमार दफ्तरी
दफ्तरी मोहल्ला, बीकानेर (राजस्थान)

❀

प्रकाश कुमार अशोक कुमार
C/o नाहटा ब्रदर्स
४, जगमोहन मल्लिक लेन
कलकत्ता-७००००७

मुद्रक :

झा प्रिन्टर्स,
सी, इमाम बक्स लेन,
-६

मुनिराज श्री महिमाप्रभसागरजी महाराज

न्म सम्वत् १८८२ कार्तिक वदि १२ दीक्षा सम्वत् २०३५ ज्येष्ठ सुदि ११

बाल मुनि श्री ललितप्रभसागरजी महाराज

न्म सम्वत् २०२५ फालगुन वदि १० दीक्षा सम्वत् २०३५ ज्येष्ठ सुदि ११

प्रस्तावना

जैन साधना पद्धति में षडावश्यकों का महत्वपूर्ण स्थान है, क्यों कि मनुष्य में अनेक तरह के दोष रहे हुए है व अनेक गुण दबे व छिपे पड़े हैं इसलिये दोषों का विशोधन, गुणों का प्रगटन तथा वृद्धि बहुत ही आवश्यक है। ये दोनों कार्य षडावश्यकों द्वारा भली भांति सम्पन्न होते हैं। आवश्यक शब्द ही यह इंगित व सूचित करता है कि वह बहुत जरूरी कार्य है, अध्यात्मिक साधना में वह बहुत उपयोगी, महत्वपूर्ण व नित्यकरणीय है। नंदीसूत्र आदि में सामयिक चतुर्विंशतिस्तव, गुरूवन्दन, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान इन छः आवश्यकों के स्वतंत्र सूत्र आगम होने का उल्लेख है। आवश्यक नामक स्वतंत्र आगम आज भी प्राप्त है और इस पर नियुक्ति चुर्णि, वृत्ति, टीका, टब्बा, बालावबोध आदि व्याख्यात्मक लाखों श्लोक परिमित साहित्य श्वेताम्बर समाज में उपलब्ध है एवं उनमे से काफी प्रकाशित भी हो चुका है। आधुनिक युग में भी सामायक, प्रतिक्रमणादि पर अनेक ग्रन्थ निकल चुके है।

जैन साधु-साध्वियों के लिए तो विधान ही है कि प्रतिदिन प्रातः सन्ध्या सूर्योदय और सूर्यास्त के समय प्रतिक्रमण अवश्य करे। व्रतधारी श्रावकों के लिए भी उभयकाल प्रतिक्रमण का विधान है। वैसे प्रत्येक जैन को सामायक प्रतिक्रमण नित्य उभयकाल करना ही चाहिए। इससे पापों की विशुद्धि होती है, प्रतिक्रमण का अर्थ है जो जो गलत या पाप कार्य हो गये हों उनसे पीछा

मुड़ जाना। उनके लिए शुद्ध मन से पूर्ण पश्चात्ताप प्रकट करना व भविष्य में उनकी पुनरावृत्ति न हो उसका ध्यान रखना।

प्रतिक्रमण किए हुए गत पापों का होता है, प्रत्याख्यान भविष्य में पाप न करने व शुभ कार्य करने के लिए किया जाता है आलोचना वर्त्तमान दोषों के परिहारार्थ की जाती है और कायोत्सर्ग देह भाव से मुक्त होने के लिए ध्यान रूप में किया जाता है।

छः आवश्यकों में पहला आवश्यक सामायक और चौथा आवश्यक प्रतिक्रमण है। इन दोनों नामों की अधिक प्रसिद्धि है। सामायिक-प्रतिक्रमण विधि और उसमें बोले जाने वाले सूत्र पाठ संबन्धी काफी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में सामायिक रात्रि प्रतिक्रमण व देवसी प्रतिक्रमण विधि सहित क्रमिक सकलन इस प्रकार से है जिससे पुस्तक को पढ़ते जावें और तदनुसार क्रिया करते जाइये, 'सामयिक' प्रतिक्रमण अपने आप हो जायेगा। सर्व साधारण के लिये ऐसे ग्रन्थों की उपयोगिता निर्विवाद है। मुनिराज श्री महिमाप्रभसागर जी, ललित प्रभसागर जी के उपदेश से श्रावक-श्राविकाओं ने प्रस्तुत ग्रन्थ प्रकाशन में सहयोग दिया और बाकी की पूर्त्ति मुनिश्री के सांसारिक सुपुत्र श्री प्रकाश कुमार अशोक कुमार, सिद्धिराज, पुखराज दफ्तरी ने की है। एतदर्थ सभी सहयोगी धन्यवादार्ह है। आशा है सामा- [illegible] करनेवाले श्राविक श्राविकाएं इससे अधिकाधिक [illegible]ाभान्वित होंगे।

—o—

परम पूज्य गणाधीशजी श्री उदयसागरजी महाराज का आशीर्वाद
सुश्रावक श्री प्रकाशकुमार दफ्तरी सपरिवार

धर्मलाभ! पत्र मिला, जानकर प्रसन्नता हुई कि—राई-देवसी प्रतिक्रमण की पुस्तक मुनि श्री महिमाप्रभसागर जी ललित प्रभसागरजी के उपदेश से प्रकाशित हो रही है। गच्छ व शासन की सेवा में अपना समय व्यतीत करना यही सच्ची सेवा होगी।

—गणाधीश उदयसागर

पुस्तक प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देने वालों की सूची

१११११) श्री प्रकाशकुमार अशोककुमार दफ्तरी बीकानेर निवासी
३७५) श्री तेजमाल जी नरेन्द्रकुमार जी दाँती सुराणा बीकानेर
१५०) श्री छगनमल जी ज्ञानमलजी मानमल जी राजेन्द्रकुमार जी अशोककुमारजी पटवा जोधपुर
१५०) श्री कमला जैन जोधपुर
१५०) स्वर्गीय सेठ श्री आसकरणजी के सुपुत्र गुलाबचन्दजी मांगीलालजी मालू, जोधपुर
१५०) स्वर्गीय सेठ मुकनलालजी की धर्मपत्नि नाथीबाई के सुपुत्र श्री नेमचन्दजी सिपाणी बीकानेर
७५) एक सज्जन (गुप्त)
७५) श्री कस्तूरचन्दजी भगनलालजी जेवरचन्दजी गुलाबचन्दजी बागरेचा मु० सियाणा जोधपुर
७५) हिम्मतमलजी पुखराजजी सिंघी (सिरोही वाला जोधपुर)
७५) सोहनलालजी टूलाजी (गूढ़ा बालोत्तरा वाला)
२००) श्री प्रेमचन्दजी माणकचन्द दुगड़

२६८६)

अनुक्रमणिका

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया।
सब जीवो को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ।।
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्तिभाव मे प्रेरित हो यह, चित उसीमे लीन रहो ।।१।।

विषयो की आशा नहीं जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं।
निज पर के हित साधन मे जो, निशदिन तत्पर रहते है ।।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते है।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुख समूह को हरते है ।।२।।

रहे सदा सत्सग उन्ही का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या मे यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ।।
नहीं सताऊं किसी जीव को, झूठ कभी नही कहा करूं।
परधन वनिता पर न लुभाऊं, सतोषामृत पिया करूं ।।३।।

अहकार का भाव न रखूं, नहीं किसी पर क्रोध करूं।
देख, दूसरो की बढती को, कभी न ईर्षा भाव धरूं ।।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूं।
बने जहां तक इस जीवन मे, औरों का उपकार करूं ।।४।।

मैत्री भाव जगत मे मेरा सब जीवो से नित्य रहे।
दीन दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणा स्रोत बहे ।।
दुर्जन क्रूर कुमार्गरतो पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्य भाव रखूं मै उन पर, ऐसी परिणती हो जावे ।।५।।

गुणीजनों को देख हृदय मे, मेरे प्रेम उमड आवे।
बने जहां तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ।।
होऊं नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषो पर जावे ।।६।।

कोई बुरा कहे या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे ॥
लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे ।
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे ॥
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥७॥

होकर सुख में मग्न न फूलें, दुख में कभी न घबरावें ।
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे ॥
रहे अडोल अकंप निरंतर, यह मन, दृढ़तर बन जावे ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, सहनशीलता दिखलावे ॥८॥

सुखी रहे सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावें ।
वैर पाप अभिमान छोड, जग नित्य नये मंगल गावे ॥
घर-घर चर्चा रहे धर्म की दुष्कृत दुष्कर हो जावे ।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावे ॥९॥

ईति भीति व्यापे नहिं जग मे, वृष्टि समय पर हुआ करें ।
धर्मनिष्ट होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करें ।
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैलें, प्रजा शांति से जिया करें ।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्व हित किया करें ॥१०॥

फैले प्रेम परस्पर जग मे, मोह दूर पर रहा करें ।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करें ॥
बनकर सब 'युग वीर' हृदय से, देशोन्नतिरत रहा करें ।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख संकट सहा करें ॥११॥

— ० —

अर्हम्

श्री स्तम्भनपार्श्वनाथाय नमः

श्रीखरतरगच्छीय श्रावकों का

श्रीप्रतिक्रमणसूत्र

विधिसहित।

— ०० —

प्राभातिक सामायिक लेने की विधि।

(सबसे प्रथम श्रावक और श्राविका पडिलेहन किये हुए शुद्ध वस्त्र पहन कर, पट्टा प्रमुख उच्च स्थान की प्रमार्जना करके ठवणी-स्थापनाचार्यजी, पुस्तक, माला आदि को स्थापन करे। बाद में कटासना, मुँहपत्ति, चरवला पास में ले सामायिक करने की जगह पूँज कर बैठे, बाद बाँये हाथ में मुँहपत्ति लेकर मुँह के सामने रखे। और दाहिना हाथ स्थापन की हुई पुस्तक आदि के सामने करके तीन नवकार गिने—)

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

एसो पंच णमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥[१]

(इस प्रकार तीन नवकार गिने। यदि प्रतिष्ठित स्थापना-चार्यजी हो तो तेरह बोल से स्थापनाजी की पडिलेहना करे—)

शुद्ध स्वरूप धारे (१), ज्ञान (२), दर्शन (३), चारित्र (४), सहित सद्दहणा-शुद्धि (५), प्ररूपणा-शुद्धि (६), दर्शन-शुद्धि (७), सहित पांच आचार पाले (८), पलावे (९), अनुमोदे (१०), मनोगुप्ति (११), वचनगुप्ति (१२), कायगुप्ति आदरे (१३)।

(पीछे चरवला मुँहपत्ति हाथ में लेकर गुरुजी को या स्थापनाचार्य को खड़े होकर वंदन करे—)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए, मत्थएण वंदामि।

---

१ अरिहंत के १२ गुण, सिद्धभगवान् के ८ गुण, आचार्यमहाराज के ३६ गुण, उपाध्याय महाराज के २५ गुण, साधुमहाराज के २७ गुण, सब मिलाने से १०८ गुण होते हैं, और नवकरवाली मे १०८ मणके होते हैं। माला जपने से पंचपरमेष्ठी के गुणों का स्मरण होता है।

(इस प्रकार तीन खमासमण देना, पीछे खड़े ही रहकर)

इच्छकार भगवन्! सुहराइ, सुहदेवसी सुखतप शरीर निराबाध सुखसंयमयात्रा निर्वहते हो जी? स्वामी साता है जी?

(ऐसा कहकर, नीचे बैठ कर, दाहिने हाथ को चरवले पर या नीचे रखकर, मस्तक नीचे नमा कर नीचे का सूत्र[1] बोले—)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइअं खामेउं इच्छं, खामेमि राइअं ॥ जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा, तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

(इस प्रकार बोलकर पीछे नीचे लिखे अनुसार बोलना—)

---

१ त्यागी और क्रियावान् गुरु वंदन करने योग्य है, पासत्था (शिथिलाचारी) गुरु को वंदन करने से कर्मों की निर्जरा नहीं होती, केवल कायक्लेश कर्मबंधन होता है। आगम में कहा है—"पासत्थाई वंदमाणस्स नेव कित्ती न निज्जरा होइ, कायकिलेसं एमेव कुणई तह कम्म बंधं च ॥ १ ॥"

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक लेवा मुँहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं'। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(ऐसा बोलकर मुँहपत्ति की पडिलेहना नीचे लिखे पच्चीस बोल मन में बोलते हुए करे—)

१ सूत्र अर्थ साचो सद्दहूं, २ सम्यक्त्वमोहनीय, ३ मिथ्यात्व - मोहनीय, ४ मिश्र - मोहनीय परिहरूं। ५ कामराग, ६ स्नेहराग, ७ दृष्टिराग परिहरूं।

(ये सात बोल मुँहपत्ति खोलते समय कहने चाहिये।)

१ ज्ञानविराधना, २ दर्शनविराधना, ३ चारित्र-विराधना परिहरूं, ४ मनोगुप्ति, ५ वचनगुप्ति, ६ काय-गुप्ति आदरूं। ७ मनोदंड, ८ वचनदंड, ९ कायदंड परिहरूं।

(ये नव बोल दाहिने हाथ का पडिलेहन के समय कहना चाहिए—)

१ सुगुरु, २ सुदेव, ३ सुधर्म आदरूं। ४ कुगुरु, ५ कुदेव, ६ कुधर्म परिहरूं। ७ ज्ञान, ८ दर्शन, ९ चारित्र आदरूं।

(अब नीचे लिखे पच्चीस बोलों से अंग की पडिलेहना करे, अर्थात् जिस अंग का नाम आवे उसी अंग को मुँहपत्ति से स्पर्श करे—)

१ कृष्णलेश्या, २ नीललेश्या, ३ कापोतलेश्या, ये तीन निलाडें मस्तके परिहरूं। १ ऋद्धिगारव, २ रसगारव, ३ सातागारव ये तीनुं मुखे परिहरूं। १ मायाशल्य २ नियाणशल्य, ३ मिथ्यादंशनशल्य ये तीन हृदये परिहरूं। १ क्रोध, २ मान, ये दोनों दाहिने कंधे परिहरूं। १ माया, २ लोभ ये दोनों बांये कंधे परिहरूं। १ हास्य, २ रति, ३ अरति ये तीन बाँये हाथे परिहरूं। १ भय, २ शोक, ३ दुगंछा ये तीन दाहिने हाथे परिहरूं। १ पृथ्वीकाय, २ अपकाय, ३ तेऊकाय ये तीन बांये चरणे परिहरूं। १ वायुकाय, २ वनस्पतिकाय, ३ त्रसकाय ये तीन दाहिने चरणे परिहरूं।

(इस प्रकार मुँहपत्ति की पडिलेहना करे। पीछे खड़े होकर—)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। सामायिक संदिसावुं ? 'इच्छं'॥ इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाऊं ? 'इच्छं' ॥ इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

(अब यहाँ हाथ जोड़ मस्तक नीचे नमा कर तीन नवकार गिने ।)

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच णमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ।

(तीन बार नवकार मंत्र बोले । पीछे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी' । ऐसा कहकर स्वयं तीन बार 'करेमि भंते' उच्चरे । यदि गुरुमहाराज या कोई बड़े हों तो वे तीन बार उच्चरावे ।)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

(यह तीन बार कहना ।)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !

इरियावहियं पडिक्कमामि ? 'इच्छं', इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा - उत्तिंग - पणग-दग-मट्टी - मक्कडासंताणा-संकमणे, जे मे जीवा विराहिया। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परिया-विया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अवि-राहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, णमुक्कारेणं न पारेमि ताव काय ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहाँ एक लोगस्सका या चार नवकार का काउस्सग्ग करे [१] पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट लोगस्स कहे—)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर खमासमण दे कर)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए

---

१ इरियावहि मे अठारह लाख चोवीस हजार एकसो बीस (१८२४१२०) मिच्छामि दुक्कडं की संख्या है।

निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बैसणो संदिसावुं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बैसणो ठाउं 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसावुं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि! इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूं? 'इच्छं'

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(इस प्रकार खमासमण देकर आठ नवकार गिने। शीत-काल में वस्त्र की आवश्यकता हो तो—)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पांगुरणो संदिसावुं 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पांगुरणो पडिग्गहुं? 'इच्छं'।

(इस प्रकार दो खमासमण देकर वस्त्र ग्रहण करे। पीछे दो घडी (४८ मिनिट) स्वाध्याय ध्यान करे या प्रतिक्रमण करे। सामायिक में वा पौषध में सामायिक और पौषधवाला व्रती श्रावक आपस में वन्दन करे तो 'वंदामो' कहे और अव्रती वन्दन करे तो सज्झाय करेह' ऐसा कहे।)

—o—

राइय-प्रतिक्रमण विधि

(प्रथम पूर्वोक्त रीति से सामायिक ले कर पीछे[1]—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं' ।

(ऐसा कह कर वाया घुटना ऊँचा करके नीचे लिखे अनुसार "जयउ सामिय०" बोलना ।)

जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जिंतिपहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण । भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अवरविदेहिं तित्थयरा, चिहुँ दिसि विदिसि जिं के वि, तीआणागयसंपइअ, वंदुं जिण सव्वेवि ॥ १ ॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ । नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहस्स नव साहू गम्मइ । संपइ जिणवर वीस मुणि बिहुंकोडिहिं वरनाण, समणह

---

१ पोषध में रहा हुवा श्रावक कुसुमिण दुसुमिण का काउस्सग्ग करके पीछे चैत्यवन्दन करते हैं ।

कोडिसहस्स दुअ थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ । चउसय छायासीया, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ३ ॥ वंदे नवकोडिसयं, पणवीसं कोडि लक्ख तेवन्ना । अट्ठावीस सहस्सा, चउसय अट्ठासिया पडिमा ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए । जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसरवर-गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं, सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं, सिव - मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-

मव्वाबाह--मपुणराविति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ६ ॥ जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड - विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहरविसनिन्नासं मंगल-कल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहर-फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर-

निब्भरेण हिअएण। ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ! ॥ ५ ॥

जय वीयराय ! जगगुरु ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! । भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूया परत्थकरणं च सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! कुसुमिण - दुसुमिण - राइय - पायच्छित्त - विसोहणत्थं काउसग्ग करूं ? "इच्छं" कुसुमिण - दुसुमिण - राइय-पायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहाँ चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना। काउस्सग्ग पारके नीचे मुजब प्रगट 'लोगस्स' कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीआचार्यजीमिश्र' ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएणं वंदामि 'श्रीउपाध्यायजीमिश्र' ॥ २ ॥

(यहाँ पर धर्माचार्य का नाम लेकर ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'जंगमयुगप्रधान भट्टारक वर्त्तमान...मिश्र' ॥ ३ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'सर्वसाधुजोमिश्र' ॥ ४ ॥

(इसके बाद दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर, गोडाली आसन से बैठ कर, मस्तक नमा कर, बाँयें हाथ से मुँहपत्ति मुख के आगे रख कर सव्वस्सवि० बोले ।)

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिससीवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-

चाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं । बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्ति, "सिद्धिगइ"—नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

[१ सामायिकावश्यक]

(अब खड़े होकर बोलना ।)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि; तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं । जो मे राइयो अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते

सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अवि-राहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(चारित्र विशुद्धि निमित्त यहाँ एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे काउस्सग्ग पार करके "लोगस्स०" कहना ।)

[२ चतुर्विंशतिस्तवावश्यक]

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए; निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दर्शनविशुद्धि के निमित्त एक लोगस्स या चार नवकारका काउस्सग्ग करना । पीछे नीचे मुजब "पुक्खरवरदीवड्ढे" कहना ।)

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायईसंडे अ जंबुदीवे अ । भरहेर-वयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स, सुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिय मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाइजरामरणसोगपणा-सणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देव-दाणव - नरिंदगणच्चियस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो

वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिला-भवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि।

(ज्ञानविशुद्धि निमित्त काउस्सग्ग में "आजूणा चउप्रहर रात्रिसंबंधी' इत्यादि आलोयणा का चितवन करें। यदि न आता हो तो आठ नवकार का काउस्सग्ग करें। पीछे नीचे मुजब "सिद्धाण बुद्धाण" कहना।)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपर-गयाणं लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा

वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

[३ वंदनावश्यक]

(इसके वाद प्रमार्जन पूर्वक बैठ कर तीसरे आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहन करे, पीछे नीचे लिखे मुजब दो वार वादणा देवे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहिं, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे राइवइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! राइअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वय-दुक्कडाए कायदुक्कडाए, कोहाए माणाए, मायाए, लोभाए

सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमा-समणो। पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(फिर)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं काय-संफासं। खमणिज्जो भे किलामो अप्प-किलंताणं बहुसुभेण भे? राइवइक्कंता? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो राइआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो-वयाराए, सव्वधम्मा-इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमाखमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

[४ प्रतिक्रमणावश्यक]

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! राइअं आलोउं? 'इच्छं' आलोएमि। जो मे राइयो अइयारो कओ,

काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणच्छि अव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्व-याणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारस-विहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

आज के चार प्रहर रात्रिमें जे में जीव विराध्या होय, सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अपकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पति काय, चौद लाख साधारण वनस्पतिकाय, दोय लाख बेइंद्रिय, दोय लाख तेइंद्रिय, दोय लाख चौरिंद्रिय, चार देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चउद लाख मनुष्य, एवं चार गतिके चोरासी लाख जीवायोनिमें, माहारे जीवे जे कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये भलो जाण्यो होय, ते सर्वे हुँ मन वचन कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान

चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दसमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पंदरमे रति-अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे मायामृषावाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य ए, अढार पाप स्थानकमोही माहारे जीवे जे कोई पाप सेव्यो होय, सेवराव्यो होय, सेवतां प्रत्ये भला जाण्या होय, ते सर्वे हु मने, वचने, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटो, पोथी, ठवणी, कवली, नवकारवालो, देव-गुरु-धर्म की आशातना करी होय, पन्नरे कर्मादानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप परनिंदा कीधु होय, कराव्यु होय करतां अनुमोद्यु होय सो सर्व मन, वचन, कायाये करके, रात्रिक अतिचार आलोयण करके पडिक्कमणामें आलोउं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

(नीचे बैठके दहिना हाथ चरवले या आसन पर रख के बोलना ।)

सव्वस्स वि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! 'इच्छं' तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(अब दहिना गोडा ऊँचा करके 'भगवन् सूत्र पढ्' 'इच्छं' कह कर तीन वार 'नवकार' तीन वार 'करेमि भंते और इच्छामि पडिक्क०' कह कर 'वंदित्तु सूत्र' बोले।)

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच-णमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छि-अव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए

सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्व याणं, तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारस-विहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ वंदित्तु-सूत्र ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मी, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥

सव्वस्स वि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! 'इच्छं' तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(अब दहिना गोडा ऊँचा करके 'भगवन् सूत्र पढ़े' 'इच्छं' कह कर तीन वार 'नवकार' तीन वार 'करेमि भंते और इच्छामि पडिक्क०' कह कर 'वंदित्तु सूत्र' बोले।)

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच-णमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छि-अव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए

पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मी, थूलगपाणाइवाय - विरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयम्मी, परिथूलग-अलिअ-वयणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा-रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ। बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयम्मी, थूलगपरदव्वहरण - विरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ। कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदार-गमण-विरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाह तिव्वअणुरागे। चउत्थ वयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरिअमप्पसत्थंमि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्प-संगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न-खित्त-वत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ

कुविअपरिमाणे । दुपए चउप्पयम्मिय, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरियं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ । उवभोग-परिभोगे, बीयम्मि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोलि-दुप्पोलियं च आहारे । तुच्छोसहि-भक्खणया, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी,-भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव दंत-लक्ख रस-केसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सरदहतलाय-सोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसलजंतग, तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुव्वट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्द-रूव-रस-गंधे । वत्था-सण-आभरणे, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते । दंडम्मि अणट्ठाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥

मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरीय-परूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिय गरहिय दुगंछियं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं काय - संफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइ वइक्कंता? जत्ता भे! जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि। खमासमणाणं राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व-धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ

तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं काय-संफासं। खमणिज्जो भे किलामो अप्प-किलंताणं बहुसुभेण भे? राइवइक्कंता? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो राइअ वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्मा-इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि॥

(अब "अब्भुट्ठिओमि" सूत्र जमीन के साथ मस्तक लगाकर पढ़ें।)

अब्भुट्ठिओ-सूत्र।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि अब्भितरराइअं खामेउं? 'इच्छं' खामेमि राइअं। जं किंचि

अपत्तिअं, परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं, सुहमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

(फिर नीचे मुताबिक दो वांदना देना।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं काय - संफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइ वइक्कंता? जत्ता भे! जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि। खमासमणाणं राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व-धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउ जावणिज्जाए

निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे राइवइक्कंता ? जत्ता मे ? जवणिज्जं च मे ? खामेमि खमासमणो ! राइअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वय-दुक्कडाए कायदुक्कडाए, कोहाए माणाए, मायाए, लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमा-समणो। पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि॥

(अब मस्तक ऊपर अंजलि लगाकर बोलना।)

आयरिय- उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ। जं मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलि करिअ सीसे। सव्वं खमा-वइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीव-रासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो। सव्वं खमाव-इत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ ३ ॥

(५ काउस्सग्ग आवश्यक)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि; तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं । जो मे राइयो अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

"श्री महावीर स्वामी छम्मासी तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं" अन्नत्थ ऊससिएणं नीस-

सिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(काउस्सग्ग में श्रीमहावीरस्वामीकृत छम्मासी तपका चिंतवन* करना। छह लोगस्स या चोबीस नवकार गिनना और जो पच्चक्खाण करना हो वह मन में धार कर काउस्सग्ग पारना)

---

*छमासी तप चिंतनका विधि इस प्रकार है, अपनी आत्मा से पूछे कि हे आत्मन्। तू भगवान् महावीर देवके शासनमे विद्यमान है, अत. परमात्मा श्रीवीर प्रभुने जैसे छम्मासी तप किया था वैसे तू कर सकता है ? मनसे ही उत्तर देना कि नहीं, तो एक दिन कम ? नहीं, दो कम ? नहीं, इस तरह एकेक दिन कम पूछते जाना और उत्तरमे ना कहते हुए यावत् २९ दिन कम करके उत्तर मे ना कहेना, बादमे पाँच मासका पूछकर ना कहना, फिर उसमे भी एकेक दिन कम करते हुए २९ दिन कम करके ४ मासका प्रश्न करना और उसकी भी ना कहना इसी तरह आगे भी हर एक महिनेमे एकेक दिन कम करते हुए यावत् ३ महिने दो महिने और १ महिने तक विचारना, पीछे एक मास भी एकेक दिन करते हुए १३ दिन कम करने, उसके बाद चौतीस भक्त (१६ उपवास) बत्तीस भक्त (१५ उपवास) आदि क्रमसे दो-दो भक्त कम करते हुए चउत्थभक्त (१ उपवास) और आंबिल नीवी एकलठाणा एकासणा बियासणा तथा

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च। वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा। चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

अवड्ढ पुरिमड्ढ साढपोरसी और अतमे नोकारसो तक विचारते हुए जो पच्चक्खाण करनेके भाव हो वह करनेका मनमे धारकर काउस्सग्ग पारना।

इस तप चितन विधिमे यह खास ध्यानमे रखनेका कि जो तप अपने न किया हो उसके लिये विचारना कि मैं नही कर सकता, और जो तप खुदने किया हो वहाँ से नीचे के तपमे विचारना कि कर सकता हूँ, लेकिन आज भाव नही है।

(६ पच्चक्खाण आवश्यक)

(अब छट्ठा आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहना, फिर नीचे मुजब दो वंदना देना ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह, मे मिउग्गहं । निस्सीहि, अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, राइवइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं । निस्सीहि, अहो कायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइ वइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे

खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमा-समणाणं, राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

सकल-तीर्थ-नमस्कार ॥

सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यन्तराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने । पाताले पन्नगेन्द्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसान्द्रान्धकारे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृङ्गे रुचकगिरिवरे कुण्डले हस्तिदन्ते, वक्खारे कूटनन्दीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवन्ते । चैत्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ २ ॥ श्रीशैले विन्ध्यशृङ्गे विपुल गिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले । सह्याद्रौ वैजयन्ते

विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ३ ॥ आवाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे देवकूटे विराटे। कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा। डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जङ्गले वाढमाले, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ५ ॥ अङ्गे-वङ्गे कलिङ्गे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलङ्गे गौडे चौण्डे मुरण्डे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौण्ड्रे। आर्द्रे माद्रे पुलिन्दे द्रविडकुवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ६ ॥ चम्पायां चन्द्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने चोज्जयिन्यां, कौशाम्ब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्याम्। नासिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्तरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्ण

दीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुञ्जे। ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसन्ध्यं, श्रीमत्तीर्थंकाराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ८ ॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे, चौज्जन्ये चैत्यनन्दे रतिकररुचके कोण्डले मानुषाङ्के। इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यन्तरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवन्ति त्रिभुवनवलये यानि चैत्यालयानि ॥ ९ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः प्रोद्यत्कल्याणहेतुकलिमलहरणं भक्तिभाजस्त्रिसन्ध्यम्। तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानन्दकारी ॥ १० ॥

(पीछे)

"इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पसायकरी पच्चक्खाण करावो जी"

(ऐसा कह कर गुरुमुख से या वृद्ध साधर्मिक के मुख से या स्वयं स्थापनाचार्य के सामने अपनी इच्छानुसार नवकारसहिअं आदि का पच्चक्खाण कर ले।)

जो सज्जन चौदह नियम स्मरण नहीं करते उनके लिये 'नमुक्कारसहिअं' का पच्चक्खाण —

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं वोसिरामि।

जो सज्जन चौदह नियम प्रतिदिन स्मरण करते हैं उनके लिये 'नमुक्कारसहिअं' का पच्चक्खाण —

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं, असणं पाणं, खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं, विगइओ पच्चक्खामि, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खामि, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

(पोरसी का पच्चक्खाण करना हो तो 'नवकारसहिअं' के स्थान पर 'पोरिसि' कहो। और उपवास एकासनादि पच्चक्खाण करना हो तो एक साथ लिखे है, वहाँ से देख लो पीछे—)

इच्छामो अणुसट्ठि नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत्सिद्धा-चार्योपाध्यायसर्व्वसाधुभ्यः॥

(यहाँ पर स्त्रियाँ प्रतिक्रमण करती हों तो 'संसारदावानल' नीचे अनुसार कहे—)

संसारदावानलदाहनीरं संमोहधूलीहरणे समीरम्। मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥१॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलि-मालितानि। संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाऽहिंसाविरललहरीसंगमा-गाहदेहम्। चूलावेलं गुरुगममणिसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

(अगर पुरुष प्रतिक्रमण करते हों तो नीचे मुताबिक 'परसमयतिमिरतरणिं' की तीन गाथा कहें—)

परसमयतिमिरतरणिं, भवसागरवारितरणवरतरणिम्। रागपरागसमीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्धसंसार-विहारकारि - दुरन्तभावारिगणा निकामम्। निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, भयावहं मोहभरं हरन्तु ॥ २ ॥ सन्देह-कारिकुनयागमरूढगूढ संमोहपंकहरणामलवारिपूरम्। संसार-सागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥३॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं, तित्थयराणं ; सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ; लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरत चक्कवट्टीणं ; अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ; जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ; सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जियभयाणं ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।

(अब खड़े होकर बोलना ।)

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तियाए, पूअणवत्तियाए, सक्कारवत्तियाए, सम्माणवत्तियाए, बोहिलाभवत्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए, सद्धाए, मेहाए,

धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर प्रथम थुई कहना—)

अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नन्द । नव कर तनु निरुपम, नील वरण सुखकन्द ॥ अहि लंछन सेवित, पउमावई धरणिंद । प्रह ऊठी प्रणमुं, नितप्रति पास जिणंद ॥ १ ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं

च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंते च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागर-वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए-सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए, मेहाए धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं

दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अवि-राहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके दूसरी थूई कहना—)

कुलगिरि वेयड्ढ, कणयाचल अभिराम । मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंडल सुखठाम । भुवणेसर व्यंतर, जोइस विमाणो नाम । वर्त्ते ते जिनवर, पूरो मुझ मनकाम ॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे धायइसंडे अ जंबुदीवेअ । भरहेरवय-विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धं-सणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाइजरामरणसोगपणा-सणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल - सुहावहस्स । को देव-दाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भग-

वओ करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ५ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके तीसरी थुई कहना)

जिहां अंग इग्यारे, बार उपांग छ छेद। दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउ भेद ॥ जिन आगम षड्द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त। सांभली सद्दहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा, पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स

वद्धमाणस्स । संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, अ वंदिआ जिनवरा चउव्वीसं । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधभ्यः" कह कर चौथी थुई कहना —)

पउमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष । सहु संघनां संकट, दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनभक्तिसूरि कहे इक चित्त । सुख सुजस समप्पे, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥

(अब नीचे बैठ कर बाँया घुटना खड़ा कर बोलना)

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ; अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ; जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ; सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति, सिद्धिगइ-नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जियभयाणं, ॥ ६ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीआचार्यजीमिश्र' ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए नीसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्यायजीमिश्र' ॥२॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'सर्वसाधुजीमिश्र' ॥ ३ ॥

(पूर्व में मुख कर पीछे उत्तर दिशा के सामने मुख करके तीन खमासमण देकर श्रीसीमंधरस्वामी का चैत्यवंदन करे— ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? इच्छं ।

सीमंधर युगमंधर, बाहु सुबाहु जाण । सुजात स्वयंप्रभ सातमा, ऋषभानन मन आण ॥ अनंतवोर्य ने सूरप्रभ, विमल वज्रधर कहिये । चंद्रानन चंद्रबाहुजी, भुजंग नेमप्रभु लहिये ॥ १ ॥ ईश्वर श्रीवयरसेनजी, महाभद्र जिनदेव । देवजस अनंतवीर्यजी, सुरपति सारे सेव ॥ पंच विदेह विचरता ए, वीस जिनेसर जाण । कृपाचंद त्रिहुँ काल में नमता क्रोड कल्याण ॥२॥

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए । जाइं जिणबिंबाइं ताइं, सव्वाइं वंदामि ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवर

पुंडरीआणं, पुरिसवरगंध हत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं, सव्व-दरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपाविउं कामस्स* (संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।)

(जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥)

(जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेणं तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥)

(नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।)

---

* श्री सीमधर स्वामी अभी विद्यमान हैं अत उनका चैत्यवदन यहीं तक बोलना चाहिए ।

श्री सीमंधर जिन स्तवन।

(१)

श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतडी अवधार लालरे। श्री० ॥ १ ॥ केवलज्ञान दिवाकरू, भांगे सादि अनन्त लालरे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद्र चंद्र चक्कीसरू, सुर नर रहे कर जोड लालरे। पद पंकज सेवे सदा, अणहूंता इक कोड लालरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरण कमल पिंजर वसे, मुझ मन हंस नितमेव लालरे। चरण शरण मोहि आसरो, भव भव देवाधिदेव लालरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ संवत अढार सत्यासीये, उत्तम मास आसाढ लालरे। सुद दसमी सुभ वासरे, बीकानेर मझार लालरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अधम उद्धारण छो तुम्हें, दूर हरो भव दुःख लालरे। कहे जिनहर्ष मया करी, देजो अविचल सुख लालरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥

(२)

हंसा ! महाविदेह तू जा जा (२)
सीमंधर प्रभु के चरणों में, प्रतिदिन यात्रा किये जा ;
अवधि मनःपर्यव-केवली जिन, दर्श स्पर्श सुख लेजा ...हंसा० १
मान सरोवर शुचि मुक्ताफल, चंचु भर भर के जा ;
समवशरण में प्रभुजी के आगे, स्वस्तिक भरत भरेजा ...हंसा० २

भूचर - खेचर - तिरि-थर देवा, संघ सेवा निवहेजा,
बोध - सुधा - पय पीवत पीवत, नित्य कर तृप्त कलेजा'''हंसा० ३
जीवन साथी सहजानंदघन, हंसो सोहं रमेजा ;
परम कृपालु देव आशीस ले, शीघ्र सिद्धि पद पैजा''''हंसा० ४

जय वीयराय ! जगगुरु ! होउ मम तुह पभावओ भयवं भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं; उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए; पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि।

(यहाँ एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कहकर श्रीसीमंधरजी की थुई कहे ।)

महोमंडणं पुण्णसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलनाणगेहं । महाणंदलच्छीबहुबुद्धिरायंसुसेवामिसीमंधरं तित्थरायं ॥१॥

पीछे नीचे लिखे तीन खमासमणपूर्वक सिद्धाचलजी के सामने मुख करके सिद्धाचलजी का चैत्यवंदन करे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? इच्छं' ॥

सिद्धाचल सेवुं सदा, सहु तीरथ सिरदार । सोरठ देश सोहामणो, तिहां ए गिरिवर सार ॥ १ ॥ तीन भुवन विच एहवो, तीरथ कोई न होय । सीमंधर वयणे करी, शेत्रुंज माहातम जाय ॥ २ ॥ श्रीयुगादि जिनराजजी, समवसर्‌या इण ठाम । तेहथी ए तीरथ बडो, अविचल सुखनो धाम ॥ ३ ॥ काती पूनम दश क्रोडसुं ए, द्राविड वारिखिल्ल जाण । सिद्धिवधु रंगे वर्‌या, कृपाचंद मन आण ॥ ४ ॥

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए । जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जो-अगराणं ॥ ४ । अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदे-सयाणं, धम्मनायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदं-सणधराणं, वियट्टछ-उमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरा-वित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥

जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

श्री पुंडरीक गणधर नमुं, पुण्डरगिरि सिणगार लालरे। पाँच करोड मुनि परिवर्या, कीधो अणसण सार लालरे ॥श्री पुंड० ॥१॥ आदिसर जिन उपदिसे, ए तीरथ परसाद लालरे। सिव कमला तुमे पामशो, सहु मेटी विखवाद लालरे ॥श्री पुंड० ॥२॥ तीरथ पतिमाँ हुँ अछुं, प्रथम तीरथ इम जाण लालरे। प्रथम सिद्ध सिद्धाचले, तुम थास्यो महिराण लालरे ॥ श्री पुंड० ॥३॥ मुनीवर आणा आदरी, संलेखना चित्त लाय लालरे। चेत्री दिन सिवपुर लह्या, घाती कर्म खपाय लालरे ॥ श्री पुंड० ॥४॥ यात्रा विधिसुं कीजिये, जिनजी दियो उपदेश लालरे। कृपाचंद गिरि-राजनी, चाहे सेवा हमेश लालरे ॥ श्री पुंड० ॥५॥

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गा- णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरु-जोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए,

धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्डमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिठ्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो आविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहाँ एक नवकारका काउत्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर श्रीसिद्धाचलजीकी थुई कहना।)

शत्रुञ्जयगिरि नमियै, ऋषभदेव पुण्डरीक। शुभतपनो महिमा, सुणि गुरुमुख निरबीक। सुद्ध मन उपवासें, विधिशु चैत्यवंदनीक। करिये जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥

इति राइयप्रतिक्रमणविधिः ॥

—०—

अथ पडिलेहनविधिः

(अब स्थिरता हो तो नीचे लिखी विधि के अनुसार पडिलेहन करें। और स्थिरता न हो तो दृष्टि पडिलेहन तो अवश्य करें*।)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पडिलेहन संदिस्साउं ? 'इच्छं' ॥

इच्छामि०×। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पडिलेहन करूं ? 'इच्छं' ॥

(यहाँ मुहपत्ति का पडिलेहन करें)—

इच्छामि०। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अंग-पडिलेहण संदिसाउं ? 'इच्छं' ॥

इच्छामि०। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अंग-पडिलेहण करूं ? 'इच्छं' ॥

(मुँहपत्ति, आसन, चरवला, धोती और कंदोरा की पडिलेहन करके फिर)

इच्छामि०। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी पडिलेहण पडिलेहाओजी।

---

* कोई सामायिक पारने के बाद भी पडिलेहन करते हैं।

× इच्छामि खमासमणो० इत्यादि सम्पूर्ण पाठ बोलना।

(ऐसा बोलकर स्थापनाचार्य की पडिलेहन करे। पीछे—)

इच्छामि०। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुहपत्ति पडिलेहुं? 'इच्छं'॥

(ऐसा कह कर यहाँ मुँहपत्ति पडिलेहना। पीछे —)

इच्छामि०। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि पडिलेहन संदिस्साउं? 'इच्छं'॥

इच्छामि०। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि पडिलेहन करूं? 'इच्छं'॥

(ऐसा कहकर कंबल वस्त्र आदि सब की पडिलेहन करे। पीछे पौषधशाला की प्रमार्जना करके काजा (कचरा) निरवद्य भूमि पर परठव कर नीचे लिखे अनुसार इरियावहिय करे।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि? 'इच्छं'। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहिआए, विराहणाए गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे - ओसा - उत्तिंग - पणग - दग- मट्टी-मक्कडा-संताणा - संकमणे जे मे जीवा विराहिया। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया,

वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट 'लोगस्स' कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-

सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च। वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा। चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

अथ सामायिक पारनेकी विधि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए नीसोहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं? 'इच्छं' ॥

(यहाँ मुँहपत्ति पडिलेहना। पीछे —)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारेमि? 'तहत्ति'।

(ऐसा कह कर आधा अंग नमा कर 'तीन नवकार' गिने। पीछे घुटने टेक कर, शिर नमा कर, दहिना हाथ नीचे स्थापन करके नीचे मुताबिक 'भयवं दसण्णभद्दो' बोले —

भयवं दसण्णभद्दो सुदंसणो थुलिभद्द वइरो य। सफलीकयगिहचाया, साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंदणेण, नासइ पावं असंकिया भावा। फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तंपि संभरइ जीवो। जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं, वायाइ भासियं किंचि। असुहं काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसह संठियस्स, जीवस्स जाइ जो कालो। सो सफलो बोद्धव्वो, सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥

सामायिक विधि से लिया विधि से किया विधि करते अविधि अशातना लगी हो, दश मन का, दश वचन का, बारह काया का, बत्तीस दूषण में जो कोई दूषण लगा हो, सो सब मन वचन काया करके तस्स मिच्छामि दुक्कडम्।

इति प्राभातिक-सामायिक-प्रतिक्रमण-विधिः संपूर्णः ॥

अथ संध्याकालीन सामायिक लेने की विधि

(दिनके अंतिम प्रहरमे पौषधशाला आदि में अथवा गृह के किसी एकान्त स्थानमें जा कर, उस स्थानका तथा वस्त्र का पडिलेहन करें। देरी हो गई हो तो दृष्टि पडिलेहन करें। साधुजी न हो तो तीन नवकार गिन कर स्थापना करे। पीछे स्थापनाचार्य के सामने बैठ कर, भूमि प्रमार्जन करके, बाँयी ओर आसन रखने और बाँयें हाथमें मुँहपत्ति लेकर नीचे का पाठ कहे)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए नीसोहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक लेवा मुहपत्ति पडिलेहुं? 'इच्छं'॥

(ऐसा कह कर मुँहपत्ति पडिलेहना पीछे)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसोहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाउं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाउं? 'इच्छं'॥

(खड़े होकर तीन नवकार गिने पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पसाय करी सामायिक, दंडक उच्चरावो" (ऐसा बोल कर तीन बार "करेमि भंते" उच्चरे।)

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते। पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥

यह तीन बार कहना।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि? 'इच्छं'। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहिआए, विराहणाए गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे ओसाउत्तिंगपणग - दग - मट्टीमक्कडासंताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिया। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहाँ पर एक लोगस्सका या चार नवकारका काउस्सग्ग करना, पार कर पीछे प्रगट 'लोगस्स' कहना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-

जिणं च । वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? इच्छं ।

(अब नीचे बैठ कर मुँहपत्ति पडिलेहन करें और दो वार वांदणा दें। यदि चउविहार उपवास हो तो मुँहपत्ति नहीं पडिलेहना और वांदणा भी नहीं देना, परन्तु तिविहार उपवास हो तो मुँहपत्ति पडिलेहे, वांदणा नहीं दें।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं,

आवस्सिआए; पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तिसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो-वयारए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि, खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्व-मिच्छोवयाराए, सव्वधम्मा-इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। "इच्छाकारे भगवन्! पसाउ करी पच्चक्खाण करूँजी"।

(अब यथाशक्ति पच्चक्खाण करना।)

(१) चउविहार का पच्चक्खाण।

दिवसचरिमं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

(२) दुविहार का पच्चक्खाण[१]।

दिवसचरिमं पच्चक्खामि, दुविहं पि आहारं असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, वोसिरामि।

(एकासणा आयंबिल तिविहार उपवास आदि व्रत किया हो तो पाणहार का पच्चक्खाण करना—)

---

१ खरतरगच्छ की परम्परा मे दुविहारके पचक्खाण मे कच्चे पानी के सिवाय ओर कुछ भी पीने की छूट नहीं है और रात मे तिविहार के पजक्खाण भी नहीं होते।

(३) पाणहार का पच्चक्खाण—

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खामि, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

(नियम चितारने वाले देशा० का पच्चक्खाण करे।

(४) देसावगासिय पच्चक्खाण—

देसावगासियं भोग-परिभोगं पच्चक्खामि, अन्नत्थ-णाभोगेण, सहसागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया-गारेणं, वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सिज्झाय सदिसाउं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सिज्झाय करूं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(कह कर खड़े-खड़े आठ नवकार गिन कर पीछे।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणो संदिसाउं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणो ठाउं? 'इच्छं'।

(अब आसन बिछा कर बैठ जाय और वस्त्र की आवश्यकता हो तो नीचे का पाठ बोल कर वस्त्र ग्रहण करें।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पंगुरणं संदिसाउं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन! पंगुरण पडिग्गहूं? 'इच्छं'।

(पीछे दो घड़ी [४८ मि०] स्वाध्याय करे या प्रतिक्रमण करे।)

इति सन्ध्याकालीन-सामायिकविधिः॥

—०—

दैवसिक-प्रतिक्रमण-विधि

(पहले विधिपूर्वक सामायिक लेकर तीन खमासमण देना —)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं' ।

(बायाँ घुटना खडा कर जय तिहुअण का चैत्यवन्दन करें ।)

जय तिहुअण वरकप्परुक्ख ! जय जिणधन्नंतरि !, जय तिहुअण कल्लाणकोस ! दुरिअक्करिकेसरि ! । तिहु-अणजण-अविलंघिआण ! भुवणत्तयसामिअ !, कुणसु सुहाइ जिणेस ! पास थंभणयपुरट्ठिअ ! ॥ १ ॥ तइ समरंत लहंति झत्ति वरपुत्तकलत्तइ, धण्ण-सुवण्ण-हिरण्णपुण्ण जण भुंजइ रज्जइ । पिक्खइ मुक्ख असंखसुक्ख तुह पास ! पसाइण, इअ तिहुअणवरकप्परुक्ख ! सुक्खइ कुण मह जिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठु सुकुट्ठिण । चक्खुक्खीण खएण खुण्ण नर सल्लिय सूलिण । तुह जिण ! सरण रसायणेण लहु हुंति पुणण्णव, जय धन्नंतरि ! पास ! मह वि तुह रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जा-जोइस-

मंत-तंत सिद्धीउ अपयत्तिण। भुवणऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण। तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ। तं तिहुअणकल्लाणकोस तुह पास। निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्दपउत्तइ मंत-तंत जंताइं विसुत्तइ। चरथिरगरल-गहुग्ग-खग्ग-रिउवग्ग विगंजइ। दुत्थिअ-सत्थ अणत्थ-घत्थ नित्थारइ दय करि। दुरियइं हरउ स पास देउ दुरियक्करिकेसरि ॥ ६ ॥ जइ तुह रूविण किण वि पेयपाइण वेलवियउ, तु-वि जाणउ जिण-पास तुम्हि हउं अंगीकरिउ। इय मइ इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहावणु, रक्खंतह नियकित्ति णेय जुज्जइ अवहीरणु ॥ ६ ॥ एव महारिय जत्त देव एहु न्हवणमहुसउ, जं अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धउ। एम पसीह सुपासनाह थंभणयपुरट्ठिय। इय मुणिवरु सिरिअभयदेउ विन्नवइ आणिंदिय ॥ ७ ॥

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय, जय समत्थ-परमत्थ जाणय जय जय गुरु गरिम गुरु जय दुहत्त सत्ताण ताणय। थंभणयट्ठिय पासजिण। भवियह भीम भवुत्थु। भय अवणिंताणंतगुण ! तुज्झ तिसंझ नमोऽत्थु ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं, तित्थयराण, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं। अप्पडिहयवरनाण-दंसण-धराणं, वियट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं; सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहम-पुणराविति, सिद्धिगइ-नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जियभयाणं, जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि।

(अब खड़े होकर बोलना।)

अरिहंतचेइआण करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धीईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेण भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताण, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर प्रथम थुई कहना —)

मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय। सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु मान। दिन दिन सुखदायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान। ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च

॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं; उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए; पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

सुर नरवर किन्नर, वंदित पद अरविंद। कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद॥ भवियणने तारे, प्रवहण सम निशदीश। चोवीसे जिनवर, प्रणमुं विशवा वीस॥ २॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि॥ १॥ तम, तिमिर-पडल-विद्धं-सणस्स सुरगण नरिंद-महियस्स। सोमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स॥ २॥ जाइजरामरणसोगपणा-सणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स। को देव-दाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं?॥ ३॥ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्न किन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ॥ ४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए, मेहाए, धिईए धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं॥ ५॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डूएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेण न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेण झाणेण अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके तीसरी थुई कहना ।)

अरथं करी आगम, भाख्या श्री भगवंत । गणधरने गुंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनन्त ॥ सुरगुरु पण महिमा, कही न शके एकन्त । समरूं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धान्त ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्ग-मुवगयाण, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा, पंजली नमंसति । त देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स । संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं

धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, अ वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर चोथी थुई कहना—)

सिद्धायिका देवी, वारे विघन विशेष । सहु संकट चूरे पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोडी, सेवे सुर नर इंद । जंपे गुणगण इम, श्रीजिनलाभसूरींद ॥ ४ ॥

(अब नीचे बैठ कर बाँया घुटना खडा कर बोलना ।)

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं, आईगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ; पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिस-

वरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगना-हाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं, धम्म सारहीणं धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवर-नाण-दंसणधराणं वियट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं; तिन्नाणं, तारयाण, बुद्धाणं, बोहयाणं; मुत्ताणं, मोअगाणं सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं; सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वावाहमपुणरा-वित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि॥

(यहाँ चार एक एक 'खमासमण' देकर बोलना।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि "श्रीआचार्यजी मिश्र ॥१॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्यायजी मिश्र ॥२॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'जंगमयुगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक··मिश्र' ॥ ३ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'सर्वसाधुजी मिश्र' ॥ ४ ॥

(ऐसा कह कर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर, बाँया हाथ मुँहपत्ती सहित मुख के आगे रख कर सिर झुका कर 'सव्वस्स वि' का पाठ बोलना ।)

सव्वस्स वि देवसिअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(अब खडे होकर बोलना ।)

(१ सामायिक आवश्यक)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं ; न करेमि न कारवेमि; तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ता-चरित्ते; सुए सामाइए; तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं,

बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

('आजुणा चार प्रहर दिवस में' का पाठ मनमे चिन्तन करे या आठ नवकार का काउस्सग्ग करे। पीछे प्रगट लोगस्स कहे।)

(२ चतुर्विंशतिस्तव आवश्यक)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पह सुपासं, जिणं

च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च । वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(३ वंदन आवश्यक)

(अब नीचे बैठ कर तीसरे आवश्यक की मुंहपत्ति पडिलेहना और नीचे मुताबिक दो बार वांदणा देना)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता मे ? जवणिज्जं च मे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि, खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए

तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्व-मिच्छोवयाराए, सव्वधम्मा-इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए; पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो-वयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च । वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(३ वंदन आवश्यक)

(अब नीचे बैठ कर तीसरे आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहना और नीचे मुताबिक दो बार वांदणा देना)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि, खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए

तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्व-मिच्छोवयाराए, सव्वधम्मा-इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए; पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो-वयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

(अब खड़े होकर बोलना ।)

(४ प्रतिक्रमण आवश्यक)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअं आलोउं ? 'इच्छं' आलोएमि। जो मे देवसिओ अइआरो कओ काईओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

आलोयण पाठ ।

आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय, सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्पकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौद लाख साधारण वनस्पतिकाय, दोय लाख बेइंद्रिय, दोय लाख तेइंद्रिय, दोय लाख चौरिंद्रिय चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच

पंचेंद्रिय, चउदे लाख मनुष्य, एवं चार गतिके चोरासी१

१ चोरासी लाख जीवाजोनी वर्णादि मूलभेद, कुलभेद।

सात लाख	पृथ्वीकाय	२०००	३५०	७ लाख
सात लाख	अपकाय	२०००	३५०	७ ,,
सात लाख	तेउकाय	२०००	३५०	७ ,,
सात लाख	वायुकाय	२०००	३५०	७ ,,
दश लाख	प्र० वनस्पति	२०००	५००	१० ,,
चौदह लाख	सा० वनस्पति	२०००	७००	१४ ,,
दो लाख	वेइन्द्रिय	२०००	१००	२ ,,
दो लाख	तेइन्द्रिय	२०००	१००	२ ,,
दो लाख	चउरिन्द्रिय	२०००	१००	२ ,,
चार लाख	देवता	२०००	२००	४ ,,
चार लाख	नारकी	२०००	२००	४ ,,
चार लाख	तिर्यंच पं०	२०००	२००	४ ,,
चौदह लाख	मनुष्य	२०००	७००	१४ ,,

प्रथम (५) पांच वर्ण हैं, उन्हें (२) दो गंध से गुणने से १० हुए, उन्हें (५) पांच रस से गुणने से ५० हुए, उन्हें (८) आठ स्पर्श से गुणने से ४०० हुए, उन्हें (५ आकृति) पांच संस्थान से गुणने से २००० हुए, उन्हें (३५० ध्रुवांक) तीनसो पचास पृथ्वीकाय के मूल-भेद से गुणने के बाद पृथ्वीकाय की कुल (७०००००) सात लाख जीवायोनि होती है। इसी प्रकार अन्य भी समझना। इति चोरासी लाख जीवायोनि भेद।

लाख जीवायोनि में, म्हारे जीवे जे कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये भलो जाण्यो होय, ते सव्वे हुं मन वचन कायायें करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

पहले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, तीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दसमे राग, इग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे मायामृषावाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य; ए अढारे पाप स्थानकमांही म्हारे जीवे जे कोई पाप सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवतां प्रत्ये भला जाण्या होय, ते सव्वे हुं मन, वचन, कायायें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पन्नरे कर्मादानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप परनिंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय, सो

सर्व मन, वचन कायायें करके, देवसिक अतिचार आलोयण करके पडिक्कमणामें आलोउं। तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(नीचे बैठ कर दाहिना हाथ चरवले वा आसन पर रख कर सव्वस्स वि बोलना।)

सव्वस्स वि देवसिअ-दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! 'इच्छं'। तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(अब दाहिना गोडा खडा करके 'भगवन्! वंदित्त सूत्र भणुं ?' 'इच्छं' ऐसा कहे। पीछे तीन नवकार और तीन बार 'करेमि भंते०' इच्छामि ठामि० कह कर वंदित्तु० कहे।)

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच-णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।

करेमि भंते। सामाईअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि पडिक्कमिउं। जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो, नाणे तह दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

वंदित्तु (श्रावकप्रतिक्रमण) सूत्र।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स॥ १॥ जो मे वयाइआरो नाणे, तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि॥ २॥ दुविहे परिग्गहम्मी, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं॥ ३॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि॥ ४॥ आगमणे निग्गमणे ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे

देसिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं, च तिण्हमइयारे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मी, थूलगपाणाइवायविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १० ॥ बीएअणुव्वयम्मी, परिथूलगअलिअवयण विरईओ । आयरिअमप्पसत्थे इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ । बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयम्मी, थूलगपरदव्वहरणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ । कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मी, निच्चं परदारगमणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥

अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाह तिव्वअणुरागे। चउत्थ-वयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थंमि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न-खित्त-वत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे। दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स य परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोगपरिभोगे, बोयम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चिवते पडिबद्धे, अपोलि-दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव य दंत-लक्ख रसकेसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं। सर-दहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमुसलजंतग- तणकट्ठे मंतमूलभेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुव्वट्टण-

ग - विलेवणे सद्दरूवरसगंधे। वत्थासण आभरणे,

पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि-अहिगरण-भोगअइरित्ते । दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइअ-वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासियम्मी, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए । पोसह-विहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरण करणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ-मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सण्णाकसायदंडेसु ।

गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि। अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ य गुरुसगासे। होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खा-णमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले। मूलगुणउत्तर-गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥

जावंत के वि साहू भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपा-वपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीइ। चउव्वीसजिण-विणिग्गय कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल-मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरी-अपरूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥४९॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिउं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

(इसके बाद दोनों गोडे खडे कर मुहपत्ति फैलाकर जमीन पर या चरवले पर रखकर दो वांदना देवे।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो; अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं,

देवसिआए आसायणाए, तित्तिसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए; जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए! अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता मे? जवणिज्जं च मे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(इसके बाद स्थापनाचार्यजी को या गुरुमहाराज हो तो उनको घुटने टेक कर शिर झुका कर 'अब्भुट्ठिओ' खमावे ।)

अब्भुट्ठिओ सूत्र ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर-देवसिअं खामेउं ? 'इच्छं' खामेमि देवसिअं जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे आलावे, संलावे - उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(फिर दो वांदणा देवे ।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइ-

क्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए! अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहु-सुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए, काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब खड़े होकर मस्तक में अंजली लगाकर बोलना)

आयरिय-उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ । जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे । सव्वं खमा-

वइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्म-निहिअ-निअ-चित्तो। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ ३ ॥

(५ काउस्सग्ग आवश्यक)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं ; न करेमि न कारवेमि; तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ता-चरित्ते; सुए सामाइए; तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

(दो लोगस्स या आठ नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे प्रगट 'लोगस्स' कहना)—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च । वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय

वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अवि-राहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे "पुक्खरवरदीवड्ढे" ।)

पुक्खरवरदीवड्ढे धायईसंडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवय-विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धं-सणस्स, सुरगणनरिंदमहिअस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाइजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स। को देव-दाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ५ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो

अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक 'लोगस्स' या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे 'सिद्धाणं बुद्धाणं' कहना)—

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स । संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ-दस दो य, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठ-निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं,

एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर 'सुअदेवया' की थुई कहना।)

सुवर्णशालिनी देयाद्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा।
श्रुतदेवी सदा मह्य-मशेषश्रुतसम्पदम् ॥ १ ॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कह कर 'खित्तदेवता-' की थुई कहना) —

यासां क्षेत्रगताः सन्ति, साधवः श्रावकादयः ।
जिनाज्ञां साधयन्तस्ता, रक्षन्तु क्षेत्रदेवताः ॥ १ ॥

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच-णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।

(६ पच्चक्खाण आवश्यक)

अब बैठ कर छट्ठा आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहना, पीछे दो वांदना देना।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता मे ? जवणिज्जं च मे ? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए; पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो-वयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइयारो

कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि, खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्व-मिच्छोवयाराए, सव्वधम्मा-इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ।

(पच्चक्खाण न किया हो तो यहाँ पर कर लेना चाहिये ।)

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत्सिद्धा-चार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

(कह कर बायाँ घुटना खडा कर पुरुष "नमोऽस्तु वर्द्धमा-नाय" कहे और स्त्रियें 'संसारदावानल' कहे ।)

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा। तज्जयावाप्त-मोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम्॥ १॥ येषां विकचारविन्दराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या। सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः॥ २॥ कषाय-तापार्दित जन्तु-निर्वृतिं, करोति यो जैन-मुखाम्बुदोद्गतः। स शुक्र-मासोद्भव वृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम्॥ ३॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूली-हरणे समीरम्। मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम्॥१॥ भावावनाम-सुरदानव-मानवेन, चूलाविलोल-कमलावलि मालितानी। संपूरिताभिनतलोक समीहितानि, कामं नमामि जिनराज-पदानि तानि॥ २॥ बोधागाधं सुपद-पदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसा विरललहरी-संगमागाह-देहम्। चूलावेलं गुरुगममणी-संकुलं दूरपारं, सारं वीरागम-जलनिधिं सादरं साधु सेवे॥ ३॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं,

लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं, धम्म नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, वियट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! स्तवन भणुं ? 'इच्छं' नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

(यहाँ पर बडा स्तवन कहे और ग्यारह गाथा से कम कहे तो स्तवन के बाद 'वरकनक' कहे।)

श्रीचिन्तामणि-पार्श्वजिन-स्तवन ।

भविका श्री जिनबिंब जुहारो, आतम परम आधारो रे ॥ भ० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारिखी जाणो, न करो शंका कांई । आगम वाणीने अनुसारे, राखो प्रीति सवाई रे ॥ भ० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब-स्वरूप न जाणे, ते कहिये किम जाणे । भूला तेह अज्ञाने भरिया, नहीं तिहाँ तत्त्व पिछाणे रे ॥ भ० ॥ २ ॥ अम्बड श्रावक श्रेणिक राजा, रावण प्रमुख अनेक । विविध परें जिनभक्ति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगते जोतां, होय निश्चय उपगार । परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जोजो आर्द्रकुमार रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारे जलचर, छे बहु जलधि मझार । ते देखी बहुला मत्स्यादिक पाम्या विरति प्रकार रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ पाँचमें अङ्गे जिन प्रतिमानो, प्रगटपणै अधिकार । सूरियाभसुर जिनवर पूज्या, रायपसेणी मझार रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ दशमे अङ्गे अहिंसा दाखी, जिन पूजा जिनराज । एहवा आगम अरथ मरोड़ी, करिये केम अकाज रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ समकित धारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या मन रंगे । जोजो एहनो

अरथ विचारी, छट्ठे ज्ञाता अङ्गे रे ॥ ८ ॥ विजय सुरे जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्त थिर राखी। द्रव्य भाव बिहुं भेदे कीनी, जीवाभिगम ते साखी रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखे, कोई शंका मति करजो। जिन प्रतिमा देखी नित नवलो। प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ भ० ॥ १० ॥ चिन्तामणि प्रभु पास पसाये, सरधा होजो सवाई। श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशे, श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ भ० ॥ ११ ॥

ॐ वरकणयसंख-विद्दुम-मरगय-घणसन्निहं विगय-मोहं। सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे स्वाहा ॥१॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि श्रीआचार्यजीमिश्र।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्यायजी मिश्र।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि श्री सर्वसाधुजीमिश्र।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह

भगवन् ! देवसिअ पायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं ?
'इच्छं,' देवसिअ पायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउ-
स्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं,
जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविरा-
हिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं
नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं;
अप्पाणं वोसिरामि ॥

-(चार 'लोगस्स' या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना,
पश्चात् काउस्सग्ग पार कर प्रगट 'लोगस्स' कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च
वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं
च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-
सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं
च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं
नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च

॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! खुद्दोपद्दव-उड्डावण-निमित्तं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं,उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं; एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चार 'लोगस्स' या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना, पश्चात् काउस्सग्ग पार कर प्रकट 'लोगस्स' कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं? 'इच्छं'

(बायाँ गोडा ऊंचा करके 'श्रीसेढी०' कहना।)

श्रीसेढी-तटिनी-तटे पुरवरे श्रीस्तम्भने स्वर्गिरौ,

श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधा-धीशैः समारोपितः। संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथयतां, नित्यं मनोवाञ्छितम् ॥ १ ॥ आधिव्याधि-हरो देवो, जीरावल्ली-शिरोमणिः। पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नत-नाथो नृणां श्रिये ॥ २ ॥

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जो-अगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरण-दयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं, धम्म नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, वियट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरु अमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ-नामधेयं

ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

भगवन् ! जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेणं तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहरविसनिन्नासं, मंगल - कल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी-दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण। ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥ ५ ॥

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! । भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

सिरिथंभणयट्ठिय - पाससामिणो, सेसतित्थसामीणं । तित्थसमुन्नइ-कारणं-सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एसिमहं सरणत्थं काउस्सग्गं करेमि सत्तीए । भत्तीए गुणसुट्ठियस्स संघस्स समुन्नयनिमित्तं ॥२॥ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजिन आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

- (अब खडे होकर बोलना चाहिये ।)

वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुव-सग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए,

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चार 'लोगस्स' या सोलह नवकार का 'काउस्सग्ग' करना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च । वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! श्री चौरासी गच्छ श्रृंगारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक चारित्रचूडामणि दादा श्रीजिनदत्तसूरिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं,उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं; एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक 'लोगस्स' या चार नवकार का काउस्सग्ग करना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं

च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। श्री चोरासी गच्छ शृंगारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक चारित्रचूडामणि दादा श्री जिनकुशल-सूरिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो॥ जाव अरिहंताण भगवंताणं नमुक्कारेणं

न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि।

(एक 'लोगस्स' या चार नवकार का काउस्सग्ग करना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च। एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहि-वरमुत्तमं दिंतु॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

(अब बाँया गोडा ऊँचा करके 'चैत्यवंदन' करे।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं'।

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु दुज्जयमयणबाणमुसुमूरणु सरसपिअंगुवन्नुगयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामि ॥ १ ॥ जसु तणु कंतिकडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ। नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउं ॥ २ ॥

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवर-नाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं,

सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंत-मक्खय-मव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ नाम धेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं॥ १॥

भगवन्! जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेणं तिदंड-विरयाणं॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहरविसनिन्नासं, मङ्गलकल्लाण-आवासं॥ १॥ विसहर-फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं॥ २॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोहग्गं॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं॥ ४॥ इअ संथुओ महायस! भत्तिब्भरनिब्भरेण

हिअएण। ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास! जिणचंद! ॥ ५ ॥

जय वीयराय! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरु-जोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

अथ लघुशान्तिस्तवः।

शान्ति शान्ति-निशान्तं, शान्तं शान्ताऽशिवं नमस्कृत्य। स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥ ओमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्। शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा - सम्पत्तिसमन्विताय शस्याय। त्रैलोक्यपूजिताय च नमो नमः शान्तिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामर-सुसमूह - स्वामिकसंपूजिताय नि-जिताय। भुवनजनपालनोद्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन-कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय। दुष्टग्रहभूत-पिशाच शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाममंत्र-प्रधान-वाक्योपयोगकृततोषा। विजया कुरुते जनहितमिति च

नुता नमत तं शान्तिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति ! विजये ! सुजये ! परापरैरजिते ! । अपराजिते ! जगत्यां, जयतीति जयावहे ! भवति ! ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे । साधूनां च सदा शिव-सुतुष्टि-पुष्टिप्रदे ! जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे ! निर्वृत्ति-निर्वाण जननि सत्त्वानाम् । अभय-प्रदाननिरते !, नमोऽस्तु स्वस्ति-प्रदे ! तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे ! नित्यमुद्यते ! देवि ! । सम्यग्दृष्टीनां धृति-रतिमतिबुद्धि-प्रदानाय ॥ १० ॥ जिन शासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानाम् । श्रीसम्पत्कीर्तियशो-वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविषविषधरदुष्टग्रहराजरोगरण-भयतः । राक्षसरिपुगणमारी, चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्ति च कुरु कुरु सदेति । तुष्टि कुरु कुरु पुष्टि, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वम् ॥१३॥ भगवति ! गुणवति ! शिवशान्तितुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् । ओमिति नमो नमो ह्रॉं ह्रीं हूँ ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर-पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी । कुरुते शान्ति नमतां, नमो नमः

शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरिदर्शितमंत्रपद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः। सलिलादिभयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगम्। स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः। मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम्। प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥

(प्रतिक्रमण में दीपक बीजली आदि अग्नि का प्रकाश अपने शरीर पर आ गया हो, या बरसात आदि के पानी की बूंद लग गई हो, इत्यादि कोई दोष लगा हो तो 'इरियावहियं०' 'तस्स उत्तरी०' 'अन्नत्थ०' कह कर एक 'लोगस्स' का काउस्सग्ग करके, प्रकट 'लोगस्स' कह कर पीछे सामायिक पारे।)

सामायिक पारने की विधि।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं? 'इच्छं'।

(ऐसा कहके मुँहपत्ति की पडिलेहन करे। पीछे।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं ? 'यथाशक्ति।'

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारेमि 'तहत्ति'।

(कहकर आधा अंग नमा कर 'तीन नवकार' गिने। पीछे शिर नमा कर दहिना हाथ नीचे स्थापन करके 'भयवं दसण्णभद्दो' बोले।)

भयवं दसण्णभद्दो, सुदंसणो थुलभद्द वइरोय। सफलीकयगिहचाया, साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा। फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तं पि संभरइ जीवो। जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं वायाइ भासियं किंचि। असुहं काएणं कयं; मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसंठियस्स, जीवस्स जाइ जो कालो। सो सफलो बोद्धव्वो, सेसो संसार-फलहेऊ ॥ ५ ॥

सामायिक विधि से लिया विधि से किया विधि करते अविधि आशातना लगी होय, दश मन के, दस वचन के, बारह काया के, बत्तीस दोष में से जो कोई दोष लगे हों, वे सब मन वचन काया करके मिच्छामि दुक्कडं ।

दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठन्ति ।
मरुस्थलीकल्पतरुः स जीयाद्, युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥१॥

कुशल गुरुराज जय तेरी, बढ़ा दो शक्तियाँ मेरी ।
हृदय मे ध्यान धरता हूँ, उपाधि दूर करता हूँ ।
मैं गाऊँ कीर्तियाँ तेरी, कुशल गुरु० ॥ १ ॥
सदा तुझ नाम लेकर के, मैं करता काम हूँ जितने ।
सफल होते वही देखे, कुशल गुरु० ॥ २ ॥
है तेरे मन्त्र की शक्ति, अजायब विश्व में रोशन ।
मुझे उसका सहारा है, कुशल गुरु० ॥ ३ ॥
तूं ही सुख सिंधु है भगवन, परम हरि पूज्य उपकारी ।
सहज मुक्ति वधू स्वामी, कुशल गुरु० ॥ ४ ॥

॥ इति संध्याकालीन-सामायिक-प्रतिक्रमणविधिः समाप्तः ॥

इति दैवसिक-प्रतिक्रमणविधिः समाप्तः ॥

—०—

अथ पच्चक्खाण सूत्राणि ॥

(१) नवकारसहिअं–पच्चक्खाणं ।

उग्गए सूरे, नमुक्कार–सहिअं मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ[1] चउव्विहं पि आहारं, असणं पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं, विगईओ पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्च-मक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं। देसावगासियं भोगोपरिभोगं पच्चक्खाइ; अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

---

१ यह पच्चक्खाण उसके लिये है जो प्रतिदिन चौदह नियम स्मरण करता है। सर्वत्र पच्चक्खाण मे जहां-जहां 'पच्चक्खाइ' और 'वोसिरइ' पाठ आते है, वहां-वहां यदि पच्चक्खाण स्वय बोलता हो तो 'पच्चक्खामि' और 'वोसिरामि' और दूसरो को पच्चक्खाण कराना हो तो 'पच्चक्खाइ' और 'वोसिरइ' बोले। एव 'लेवालेवेण' से पच आगार साधु के लिये हैं, गृहस्थ के लिये नहीं है, इसलिये ये पंच आगार गृहस्थ न बोले।

(२) नवकारसहिअं पच्चक्खाणं ।[1]

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चक्खाइ, चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं वोसिरइ ॥

(३) पोरिसी–साड्ढपोरिसी-पच्चक्खाणं ।

पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाइ । उग्गए सूरे, चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्न-कालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(४) पुरिमड्ढ-अवड्ढ–पच्चक्खाणं ।

सूरे उग्गए पुरिमड्ढं, अवड्ढं, वा पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

---

१ यह पच्चक्खाण जो चौदह नियम स्मरण नहीं करता है उसके लिये है अर्थात् जो श्रावक नियम नहीं स्मरण करता हो, वह नियम का और देशावगासिक का आगार नहीं पच्चक्खे ।

(५) एकासण-बिआसण-पच्चक्खाणं ।

पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसा-मोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं बिआसणं वा पच्चक्खाइ, दुविहं तिविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारि-आगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठा-वणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं[1] वोसिरइ ॥

(६) एगलठाण-पच्चखाणं ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसा-मोहेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं एगट्ठाणं,

---

१ यहाँ पर साधु के लिए एकासण, बिआसण, आयबिल, नीवि और तिविहार उपवास के पच्चक्खाण मे छह आगार और होते है—"पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा ।"

पच्चक्खाइ, दुविहं तिविहं चउव्विहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(७) आयंबिल–पच्चक्खाणं ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, आयंबिलं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एगासणं पच्चक्खाइ, तिविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥

(८) निव्विगइय–पच्चक्खाणं ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थ-

णाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, निव्विगइयं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं पच्चक्खाइ तिविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, सागारिआगारेणं आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, परिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(९) चउविहार-उपवास-पच्चक्खाणं ।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ; चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(१०) तिविहार-उपवास-पच्चक्खाणं ।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, तिविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पाणहारपोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, पुरिमड्ढं, अवड्ढं वा

पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(११) विगइ-पच्चक्खाणं।

विगईओ पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं वोसिरइ[1] ॥

(१२) देसावगासिक पच्चक्खाणं।

देसावगासियं, भोगं परिभोगं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(१३) दत्तियं पच्चक्खाणं।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं पुरिमड्ढं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसा-

---

१ ११-१२ ये दोनो पच्चक्खाण प्रत्येक पच्चक्खाण के अन्तिम पद 'वोसिरइ' के पहले जो चौदह नियम धारता हो तो उच्चरे। जो चौदह नियम नहीं धारता हो तो ये दोनों पच्चक्खाण न उच्चरे।

मोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं एगट्ठाणं दत्तियं पच्चक्खाइ, तिविहं पि चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(१४) दिवसचरिम-चउविहार-पच्चक्खाणं ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(१५) दिवसचरिम-दुविहार-पच्चक्खाणं ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(१६) पाणाहार-पच्चक्खाणं ।

पाणाहारं दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥

(१७) भवचरिम-पच्चक्खाणं ।

भवचरिमं पच्चक्खाइ तिविहं पि चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(१८) गंठिसहिअ, मुट्ठिसहिअ और अंगुट्ठसहिय आदि अभिग्रह का पच्चक्खाण[1] ।

गंठिसहिअं मुट्ठिसहिअं वा पच्चक्खाइ, अण्णत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया-गारेणं, वोसिरइ ॥

पच्चक्खाण की आगार संख्या—

दो चेव नमुक्कारे, आगारा छच्च पोरिसिए उ ।
सत्तेव य पुरिमड्ढे, एगासणयम्मि अट्ठेव ॥ १ ॥
सत्तेगट्ठाणेसु अ, अट्ठेव य अंबिलम्मि आगारा ।
पंचेव अब्भत्तट्ठे, छप्पाणे चरिम, चत्तारि ॥ २ ॥
पंच चउरो अभिग्गहे, निव्वीए अट्ठ नव य आगारा ।
अप्पावरणे पंच चउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥

---

१ इस पच्चक्खाण मे पाचवाँ 'चोलपट्टागारेण' चोलपट्टा का आगार साधु के लिये होता है ।

पच्चक्खाण करने का फल—

पच्चक्खाणमिणं सेविऊण भावेण जिणवरुदिट्ठं।
पत्ता अणंतजीवा सासयसुक्खं अणाबाहं॥ १ ॥

देशावकाशिक का पच्चक्खाण

अहण्णं भंते ! तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्च-क्खामि। दव्वओ, खित्तओ कालओ, भावओ। दव्वओणं देसावगासियं, खित्तओणं इत्थवा, अन्नत्थ वा, कालओणं जाव धारणा, भावओणं जाव गहेणं न गहेज्जामि, छलेणं न छलेज्जामि, अन्नेण केणवि रोगायंकेण वा एस मे परिणामो न परिवज्जइ ताव अभिग्गहो, अणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ।

इस प्रकार देसावगासिक का पच्चक्खाण तीन बार उच्चरे और इसमें वहुवेल का आदेश लेवे नहीं। देसावकासिक जघन्य से तीन सामायिक और उत्कृष्ट से १५ सामायिक का होता है। देसावकासिक पारने की विधि पोसह पारने की विधि के अनुसार समझना। जैसे मुहपत्ति पडिलेहन कर देसावगासिक पारूँ ? पारेमि ! इत्यादि दो खमासमणापूर्वक आदेश मांगकर पारने का सूत्र "भयवं दसण्णभद्दो॰" की चौथी गाथा में "सामाइय पोसह संठियस्स" की जगह "सामाइय देसावगासियं संठियस्स" इत्यादि पाठ कहे।

॥ इति पच्चक्खाणसूत्राणि ॥

अथ थुइ-स्तवनसंग्रहः

—०—

॥ द्वितीया की स्तुति ॥

मन शुद्ध वंदो भावे भवियण, श्रीसोमंधर रायाजी।
पांचसे धनुष प्रमाण विराजित, कंचनवरणी काया जी ॥
श्रेयांस नरपति सत्यकि नंदन, वृषभ लंछन सुखदायीजी।
विजय भली पुखलावई विचरे, सेवे सुरनर पायाजी ॥१॥
काल अतीत जे जिनवर हुआ, होस्ये जेह अनंता जी।
संप्रति काले महाविदेहे, वरते वीस विख्याता जी ॥
अतिशयवंत अनंत गुणाकर, जगबंधव जगत्राता जी ॥
ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिव सुखशाताजी ॥२॥
अरथेश्री अरिहंत प्रकाशी, सूत्रे गणधर आणी जी।
मोह मिथ्यात्व तिमिर भर नाशन, अभिनव सूर समाणीजी।
भवोदधि तरणी मोक्ष निसरणी, नय निक्षेप सोहाणीजी।
ए जिण वाणी अमिय समाणी आराधो भवि प्राणीजी ॥३॥
शासन देवी सुरनर सेवी श्री पंचागुली माईजी।
विघन विडारिणी संपति कारिणी, सेवक जन सुखदाईजी।
त्रिभुवन मोहिनी अंतरयामिनी, जगजन ज्योति सवाईजी।
सान्निध्यकारी संघ नै होज्यो, श्री जिन हर्ष सुहाईजी ॥४॥

॥ पंचमी की स्तुति ॥

पंच अनंत महंत गुणाकर, पंचमी गति दातार। उत्तम पंचमी तप विधि दायक, ज्ञायक भाव अपार ॥ श्री पंचानन लांछन लांछित, वांछित दान सुदक्ष। श्री वर्द्धमान जिणंद सुवंदो, आणंदो अविपक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोधक, बोधक भव्य उदार। पंच अणुव्रत ंच महाव्रत, विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंद्रिय दमी शिव पहुंता, ते सघला जिनराय। पंचमी तपधर भवियण ऊपर, सुथिर करो सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर युगवर, पंचम गणधर वाण। पंच ज्ञान विचार विराजित, भाजित मद पंच बाण ॥ पञ्चम काल तिमिर भरमांहे, दीपक सम सोभंत। पञ्चमी तप फल मूल प्रकाशक, ध्यायो जिन-सिद्धांत ॥ ३ ॥ पञ्च परम पुरुषोत्तम सेवा, कारक जे नरनार। वलि निरमल पंचमी तप धरं, तेह भणी सुविचार ॥ श्री सिद्धायिका देवी अहनिस, आपो सुक्ख अमंद। श्रीजिनलाभ सूरींद पसाये, कहे जिनचंद मुणींद ॥ ४ ॥

॥ आठम की स्तुति ॥

चउवीसे जिनवर, प्रणमुॅ हुॅ नितमेव। आठम दिन करिये, चंदाप्रभुजीनी सेव। मूरति मन मोहे, जाणे पूनम

चंद। दीठां दुख जावे, पामे परमानन्द ॥ १ ॥ मिली चौसठ इन्द्र, पूजे प्रभुजीना पाय। इन्द्राणी अपछरा, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर द्वीपे, मिली सुरवरनी कोड। अठाही महोच्छव, करता होडाहोड ॥ २ ॥ सेत्रुँजा सिखरे, जाणी लाभ अपार। चोमासे रहिया, गणधर मुनि परिवार ॥ भवियणने तारे, देइ धरम उपदेश। दूध साकरथी पिण, वाणी मीठी विशेष ॥ ३ ॥ पोसह पडिक्कमणो, करिये व्रत पच्चक्खाण आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥ आठ मङ्गल थाये, दिन-दिन कोडि कल्याण। जिनसुक्ख-सूरि कहे, शासनदेवी सुजाण ॥ ४ ॥

॥ इग्यारस की स्तुति ॥

अरनाथ जिनेसर, दीक्षा नमिजिन ज्ञान। श्रीमल्लि जनम व्रत, केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर, सुदि उत्तम अवधार। ए पंच कल्याणिक, समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनोपम, एक अधिक गुण धार। इग्यारे वारे, प्रतिमा देशक सार ॥ इग्यारे दुगुणा, दोय अधिक जिनराय। मन सुद्धे सेव्यां, सब संकट मिटजाय ॥ २ ॥ जिहां वरस इग्यारे, कीजे व्रत उपवास। वली गुणणो

गुणिये, विधिसेती सुविलास ॥ जिनआगम वाणी, जाणी जगत प्रधान। एक चित्त आराधो, साधो सिद्धि विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर भवणवण, सम्यग दरिसणवंत। जिनचंद सुसेवक, वेयावच्च करंत ॥ श्री संघ सकलमें, आराधक बहु जाण। जिण शासनदेवी, देव करो कल्याण ॥ ४ ॥

॥ चौदश की स्तुति ॥

प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेसर, जाकी कीजे सेव।
गच्छ चौरासी जेहने थाप्या, जाकी करणी एह ॥
तेहने पाखी चउदस कीजे, बीजे अंग कहाय।
पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो, जिम जिम संशय जाय ॥१॥
चउवीसे जिन पूजा कीजे, मानो जिनकी आण।
कल्पसूत्र नी पाखीं चौदस, जोवो चतुर सुजाण ॥
इण पर ठाम ठाम तुम देखो, चौदस पाखी होय।
भूला कांइ भमो तुम प्राणी, सांचो जिन धर्म जोय ॥२॥
चवदसरे दिन पाखी कीजे, सूत्रे केरी साख।
भविक जीव इक मन आराधो, टीका चूर्णि भाष्य ॥
आवश्यक सूत्र इण पर बोले, चउदस रे दिन पाखी।
चउद पूरब धर इण पर बोले, ते निश्चय मन राखी ॥३॥

श्रुतदेवी इकमन आराधो, मन वांछित फल होय।
जे जे आज्ञा सूधी पाले, ज्यांनो विघन हरेय॥
सेवक इण पर करे वीनती, सूधो समकित पाय।
खरतर गच्छ मंडण कुमति विहंडण, माणिक्यसूरि गुरुराय॥४॥

—o—

स्तवन संग्रह

॥ श्री तीर्थमाला स्तवन ॥

शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या, भला गुण भर्या रे॥ सीधा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे॥ १ ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगते गया रे॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ २ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे। भरते भराव्यो बिंब ॥ ती० ॥ ३ ॥ आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे। विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ ४ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे। सिद्धा तीर्थंकर वीस ॥ ती० ॥ ५ ॥ नयरी चंपा निरखीये, हिये हरखीये रे। सिद्धा श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥ ६ ॥ पूर्वदिशे पावापुरी, ऋद्धे भरी रे। मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ ७ ॥ जेसलमेर जुहारीये, दुःख वारीये रे। अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती०॥८॥

बीकानेरज वंदीये, चिरनंदिये रे। अरिहंत देहरा आठ ॥ ती० ॥ ९ ॥ सेरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे। फलोधी थंभण पास ॥ ती० ॥ १० ॥ अंतरीक अजाहरो, अमीझरो रे। जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ ११ ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे। राणपुरे रिसहेस ॥ ती० ॥ १२ ॥ श्रीनाडोलाई जादवो, गोडी स्तवो रे। श्रीवरकाणो पास ॥ ती०॥ १३ ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे। रुचक कुंडल चार चार ॥ ती० ॥ १४ ॥ शाश्वती अशाश्वती प्रतिमा छती रे। स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ १५ ॥ तीरथ यात्रा फल तिहाँ, होजो मुझ इहाँ रे। समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ १६ ॥ इति॥

॥ श्री सीमंधर जिन-स्तवन ॥

धन धन खेत्र महाविदेह जी, धन्य पुंडरिकणी गाम, धन्य तिहांनां मानवीजी, नित्य उठी करे रे प्रणाम। सीमंधर स्वामी कइयें रे, हुं महाविदेहे आवीश, जयवंता जिनवर कइये रे हुं तुमने वांदिश ॥ १ ॥ चाँदलीया संदेशडो जी, कहेजो सीमंधर स्वाम, भरतक्षेत्रना मानवी जी, नित्य उठी करे रे प्रणाम ॥ सी० ॥२॥ समवसरण देवें

रच्यु तिहां, चौसठ इंद्र नरेश, सोना तणे सिंहासन बेठा, चामर छत्र धरेश ॥ सी० ॥ ३ ॥ इंद्राणी काढे गहुंलीजी, मोतीनां चौक पूरेश, ललिललि लीये लुंछणांजी, जिनवर दीये उपदेश ॥ सी० ॥ ४ ॥ एहवे समें में सांभल्युंजी, हवे करवा पच्चक्खाण, पोथी ठवणी तिहां कनेजी, अमृत वाणी वखाण ॥ सी० ॥ ५ ॥ रायनें वालां घोडलाजी, वेपारीने वाला छे दाम, अमने वालां सीमंधर स्वामी, जेम सीताने श्रीराम ॥ सी० ॥ ६ ॥ नहि माँगु प्रभु राजरीद्धिजी, नहि माँगु गरथ भंडार, हुं माँगु प्रभु एटलुंजी, तुम पासे अवतार ॥ सी० ॥ ७ ॥ देवे न दीधी पांखडीजी, केम करी आवुं हजूर, मुजरो मारो मानजोजी प्रह ऊगमते सूर ॥ सी० ॥ ८ ॥ समयसुंदरनी विनतीजी, मानजो वारंवार, बे कर जोडी विनवुंजी विनतडी अवधार ॥ सी० ॥ ९ ॥ इति

॥ पंचमी का स्तवन ॥

ढाल (१)

प्रणमी श्रीगुरुपाय, निरमल ज्ञान उपाय । पंचमी तप भणुं ए, जनम सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चौवीसमो जिणचद, केवलज्ञान दिणंद । त्रिगड़े गहगह्यो ए, भवियण

ने कह्योए ॥ २ ॥ ज्ञान वड़ो संसार, ज्ञान मुगति दातार। ज्ञान दीवो कह्योए, साचो सद्दह्योए ॥ ३ ॥ ज्ञान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश। ज्ञान विना पशुए, नर जाणे किस्युंए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण। ज्ञानी सर्वतुए, किरिया देशतुए ॥ ५ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वास, करम करे जे नाश। नारकीना सहीए कोड़ वरस कहीए ॥ ६ ॥ ज्ञान तणो अधिकार, बोल्या सूत्रमझार। करिया छे सहीए, पण पाछे कहीए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो ज्ञान, होवे तो अति परधान। सोनाने सूरोए, शंख दूधे भर्योए ॥ ८ ॥ महानिशीथमझार, पंचमी अक्षर सार। भगवंत भाखियोए, गणधर साखियोए ॥९॥

ढाल (२) कालहरानी देसी

पंचमी तप विधि सांभलो, जिमपामो भव पारो रे। श्री अरिहंत इम उपदिशे, भवियण ने हितकारो रे ॥ पं० ॥ १ ॥ मिगसर माह फागुण भला, जेठ आषाढ वैशाखो रे। इण षट मासे लीजिये, शुभ दिन सद्गुरु साखो रे ॥ पं० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरे, गीतारथ गुरु वंदी रे। पोथी पूजो ज्ञाननी, शक्ति हुवे तो नंदी रे

॥ पं० ॥ ३ ॥ बेकर जोड़ी भावसुं, गुरुमुख करो उपवासो रे। पंचमी पडिक्रमणो करो, पढो पंडित गुरु पासो रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ जिणदिन पंचमी तपकरो, तिणदिन आरंभ टालो रे। पंचमी स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचारज विण पालो रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ पांच मास लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी रे। पाँच वरस पाँच मासनी, पंचमी करो शुभ दृष्टि रे ॥ पं० ॥ ६ ॥

ढाल (३) उल्लाला की देशी

हवे भवियण रे पञ्चमी उजमणो सुणो, घर सारू रे वारु धन खरचो घणो। ए अवसर रे आवंता वलि दोहिलो, पुण्य जोगे रे, धन पामंतां सोहिलो ॥ (उल्लालो) सोहिलो वलिय धन पामंतां पण धरम काज किहां वली। पञ्चमी दिन गुरु पास आवी कोजिए काउस्सग रली। त्रण ज्ञान दरशण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजीए। थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा कीजिए ॥ १ ॥ (ढाल) सिद्धांतनी रे पाँच परत वीटांगणा। पाँच डोरा रे लेखण पाँच मजोसणा। वासकूंपा रे कांबी वारू वतरणा ॥ (उल्लालो) वतरणा वारू वलिय कमली पाँच झिलमिल अति भली। स्थापनाचारिज पाँच ठवणी, मुहपत्ती पड

पाटली। पटसूत्र पाटी पञ्च कोथल पञ्च नवकरवालियां।
इणपरे श्रावक करे पञ्चमी, उजमणो उजवालिया ॥ ढाल ॥
वलि देहरे रे स्नात्र महोछव कीजिए, घर सारु रे दान
वलि तिहां दीजिए। प्रतिमाजी ने रे आगल ढोवणुं ढोइए
पूजा नां रे जे जे उपगरण जोइए॥ (उल्लालो) जोइए
उपगरण देव पूजा, काज कलश भृंगार ए। आरती मंगल
थाल दीवो धूपधाणुं सार ए। घनसार केशर अगर सूखड़
अंगलूहणो दीसए। पञ्च पंच सगली वस्तु ढावो सक्तिसुं
पचवीस ए॥ ३॥ (ढाल) पञ्चमीता रे साहम्मी सर्व
जमाड़िये, रात्रि जोगे रे गीत रसाल गवाड़िये। इण
करणी रे करता ज्ञान आराधिये। ज्ञान दरसण रे उत्तम
मारग साधिये॥ (उल्लालो) साधियें मारग एहकरणी,
ज्ञान लहिये निरमलो। सुरलोकने नरलोक मांहे ज्ञानवंत
ते आगलो। अनुक्रमे केवल ज्ञान पामी शाश्वता सुख
जे लहे। जे करे पञ्चमी तप अखंडित, वीर जिणवर इम
कहे॥४॥ (कलश) एम पञ्चमी तप फल प्ररूपक वर्द्धमान
जिनेसरो। मैं थुण्यो श्रीअरिहंत भगवत अतुल बल अल-
वेसरो। जयवंत श्रीजिनचंद्रसूरिज सकलचंद नमंसियो।
वाचनाचारिज समयसुन्दर भक्तिभाव प्रशंसियो॥ ५॥

एकादशी स्तवन

समवशरण बैठा भगवंत, धर्म प्रकाशे श्रीअरिहंत।
बारे परषदा बैठी जुड़ी, मिगसरसुदि इग्यारस वड़ी ॥१॥
मल्लिनाथ ना तीन कल्याण, जन्म दीक्षा ने केवलज्ञान।
अरदीक्षा लीधी रूवड़ी ॥ मि० ॥ २ ॥
नमि ने उपनुं केवल ज्ञान, पाँच कल्याणक अति परधान।
ए तिथिनी महिमा एवड़ी ॥ मि० ॥ ३ ॥
पाँच भरत ऐरवत इमहीज, पाँच कल्याणक हुवे तिमहीज।
पञ्चासनो संख्या परगड़ी ॥ मि० ॥ ४ ॥
अतीत अनागत गणतां एम, दौढसौ कल्याणक थायेतेम।
कुण तिथि छै ए तिथि जेवडी ॥ मि० ॥ ५ ॥
अनंत चोवीसो इण परें गिणो, लाभ अनंत उपवासां
तणो। ए तिथि सहु तिथि सिर राखड़ी ॥ मि० ॥ ६ ॥
मौनपणे रह्या श्रीमल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ।
मौन तणी प्रवृत्ति इम पड़ी ॥ मि० ॥ ७ ॥
अठपुहरी पोसह लीजिये, चौविहार विधिसुं कीजिये।
पण परमादन कीजे घड़ी ॥ मि० ॥ ८ ॥
वरस इग्यार कीजे उपवास, जावज्जीव पण अधिक-
उल्हास। एतिथि मोक्षतणी पावड़ी मि० ॥ ९ ॥

उजमणुं कीजै श्रीकार, ज्ञानना उपगरण इग्यारे इग्यार।
करे काउसग्ग गुरु पाये पड़ी ॥ मि० ॥ १० ।
देहरे स्नात्र करीजे वली, पोथो पूजीजे मन रली। मुगति-
पुरी कीजे ढूकड़ी ॥ मि० ॥ ११ ॥
मोन इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहिये सर्व।
व्रत पच्चक्खाण करो आखड़ी ॥ मि० ॥ १२ ॥
जेसलसोल इक्यासी समे, कीधुं स्तवन सहुमन गमे।
समयसुन्दर कहे करो द्यावड़ी ॥ मि० ॥ १३ ॥

॥ श्री गौतमस्वामीजी का रास ॥

वीर जिणेसर चरणकमल, कमला कय वासो, पणमवि पभणिसु सामीसाल, गोयम गुरु रासो। मण तणु वयण एकंत करिवि, निसुणहु भो भविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरि भरह खित्त, खोणी तल मंडण। मगध देस सेणिय नरेस, रिऊ दल बल खंडण। धणवर गुब्बर गाम नाम, जिहां गुण गण सज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इन्द्रभूइ, भूवलय पसिद्धो, चउदह विज्जा विविह रूव, नारी रस लुद्धो। विनय विवेक

विचार सार, गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जणवि, पंकज जल पाडिय, तेजहिं तारा चन्द्र सूरि, आकाश भमाडिय। रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधाडिय, धीरिम मेरु गंभीर सिंधु चंगम चय चाडिय ॥ ४ ॥ पेक्खवि निरुवम रूव जास, जण जंपे किंचिय, एकाकी किल मित्त इत्थ, गुण मेल्या संचिय। अहवा निश्चय पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गउरी गङ्ग, तिहां विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय, जसु आगल रहियो, पंच सयां गुण पात्र छात्र, हींडे परवरियो। करिय निरंतर यज्ञ करम, मिथ्यामति मोहिय, अणाचल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥

वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरहवासंमि, खोणीतल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा, सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जनिलो, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥

भास ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चौविह संघ पइट्ठा जाणी। पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव

जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां कीजे, जिण दीठे मिथ्यामति छीजे। त्रिभुवन गुरु सिंहासन बेठा, ततखिण मोह दिगंत पइट्ठा ॥ ६ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा। देव दुंदुभि आगासें वाजी, चरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुम वृष्टि विरचे तिहाँ देवा, चउसठ इन्द्रज मांगे सेवा। चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसमरसभर वर वरसंता, जोजन वाणि वखाण करंता। जाणवि वद्धमाण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंतसमोहिय जलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता। पेक्खवि इन्द्रभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंडक जिम ते वहता, समवसरण पुहता गहगहता। तो अभिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपे तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्यु बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले। मो आगल कोइ जाण भणीजे, मेरु अवर किम उपमा दीजे ॥ १५ ॥

वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न, पावापुर सुरमहिय, पत्त नाह संसार-तारण, तिहिं देवइ निम्महिय समवसरण बहु सुक्ख कारण, जिणवर जग

उज्जोय करै, तेजहि कर दिनकार। सिंहासण सामी ठव्यो हुओ सुजय जयकार ॥ १६ ॥

भास ॥ तो चढियो घण मान गजे, इन्द्रभूइ भूयदेव तो, हुंकारो करो संचरिय, कवणसु जिणवर देव तो। जोजन भूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारम्भ तो, दह दिसि देख विबुध वधू, आवंति सुररम्भ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो, वइर विवर्जित जंतुगण, प्रातिहारिज आठ तो। सुर नर किन्नर असुरवर, इन्द्र इन्द्राणी राय तो, चित्त चमकिय चिंतवे ए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामो वीरजिण, पेखिय रूप विसाल तो, एह असंभव संभवे ए, साचो ए इन्द्रजाल तो। तो बोलावइ त्रिजगतगुरु, इन्द्रभूइ नामेण तो, श्रीमुख संसय सामो सवे, फेडे वेद पएण तो ॥ १९ ॥ मान मेलि मद ठेलि करी, भगतेहिं नाम्यो सीस तो, पंचसयांसु व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो। बंधव संजम सुणिवि करी, अगनिभूइ आवेय तो, नाम लेई आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥२०॥ इन अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर इग्यार तो, तो उप भुवन गुरु संयम शुं व्रत बार तो। बिहुं उपवासे

ए, आपणपे विहरंत तो, गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥

वस्तु ॥ इन्द्रभूइ इन्द्रभूइ चढियो वहुमान, हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरन्तो ; जे जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंत तो, बोधिवीज सज्झाय मने, गोयम भवहि विरत्त ; दिक्ख लेई सिक्खा सहो, गणहर पय संपत्त ॥ २२ ॥

भास ॥ आज हुओ सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य भरो ; दीठा गोयम सामि, जो निय नयणे अमिय झरो । समवरण मझार, जे जे संसा ऊपजे ए; ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजे दीख, तीहां तोहां केवल ऊपजे ए ; आप कने अणहुंत, गोयम दीजे दान इम । गुरु ऊपर गुरु भक्ति, सामी गोयम उपनिय; इणि छल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढी चउवीस जिण । आतम लब्धिवसेण, चरमसरीरा सो य मुनि । इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय तापस पन्नरसएण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तप सोसिय निय अंग, अम्हां सगति न ऊपजे ए । किम चढसे दृढकाय, गज जिम दीसे

गाजतो ए। गिरुओ एणे अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए। तो मुनि चडियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निष्फन्न दंडकलश ध्वजवड सहिय; पेखवि परमानन्द, जिणहर भरहेसर महिय। निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब। पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर - सामीनो जीव, तिर्यक्जृंभक देव तिहां, प्रतिबोध्या पुंडरिक कंडरिक अध्ययन भणी। वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे, लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांड घृत आण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे, गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे। पंच सयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे। साचा गुरु संयोग, कवल ते केवलरूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिण-नाह, समवसरण प्राकारत्रय। पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे। जाणे जणवि पीयूष, गाजंतो घण मेघ जिम। जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ पंचसया ॥ ३० ॥

वस्तु ॥ इणे अनुक्रमे इण अनुक्रमे नाण संपन्न, पन्नरह सय परिवरिय। हरिय दुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवि जगगुरु वयण, तिहनाण अप्पाण निंदइ। चरम जिनेसर इम ...

गोयम म करिस खेद। छेही जाइ आपण सही, होस्यां तुल्ला बेउ ॥ ३१ ॥

भास ॥ समियो ए वीर जिणन्द, पुनमचन्द जिम उल्लसिय, विहरियो ए भरहवासम्मि, वरस बहुत्तर संवसिय। ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल संघे सहिय, आवियो ए नयणानन्द, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेसियो ए गोयम सामि, देवसमा प्रतिबोध करे, आपणो ए तिसला देवि, नंदन पुहतो परमपए। वलतो ए देव आकाश, पेखिवि जाण्यो जिण समे ए, तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आप कनासु टालियो ए, जाणतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए। अतिभलु ए कोधलुं सामि जाण्युं केवल मांगसे ए, चिन्तव्युं ए बालक जेम, अहवा केड़े लागसे ए ॥ ३४ ॥ हुं किम ए वीर जिणंद, भगतिहिं भोले भोलव्यो ए, आपणो ए अविहड नेह, नाह न संपे साचव्यो ए। साचो ए वीतराग, नेह न हेजें लालियो ए, तिण समे ए गोयम चित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतुं ए जो उल्लट्ट, रहितुं रागे साहियो ए। केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज

ऊमाहियो ए। तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए, गणधरु ए करय वखाण, भवियण भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥

वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासें संवसिय, तीस वरस संजम विभूसिय, सिरि केवल नाण पुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुण निलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥

भास ॥ जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमवने परिमल महके, जिम चन्दन सोगंध निधि। जिम गंगाजल लहरियां लहके, जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरु वर कणय वतंसा, जिम महुयर राजीव वने। जिम रयणायर रयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केलि वने ॥ ३९ ॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो। पंचानन जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुर तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम

मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए। जिम भूमिपति भुयबल चमके, जिम जिनमन्दिर घण्टा रणके, गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिन्तामणि कर चढोयो आज, सुरतरु सारे वंछित काज, कामकुम्भ सहु वशि हुआए। कामगवी पूरे मन कामी, अष्ट महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरो ए ॥४२॥ पणवक्खर पहिलो पभणीजें, माया बीजो श्रवण सुणीजे, श्रीमती सोभा संभव ए। देवह धुरि अरिहंत नमीजे, विनयपहु उवझाय थुणीजे, इण मन्त्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां कांई करीज, देस-देसांतर कांई भमीज, कवण काज आयास करो। प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समग्गल ततखिण सीजे, नव निधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चउदय सय बारोत्तर वरसे, गोयम गणधर केवल दिवसे, कियो कवित्त उपगार परो। आदिहिं मंगल ए पभणीजे, परव महोच्छव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए। विनयवंत विद्या भण्डार, तसु गुण पुहवो न लब्भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए। गोयम सामीनो रास भणीजे, चउविह संघ रलियात कीजे, रिद्धि वृद्धि

कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छडा दिवरावो, माणक मोतीना चौक पुरावो, रयण सिंहासन वेसणो ए। तिहां वेसी गुरु देशना देशे, भविक जीवना काज सरेशी, नित नित नित मङ्गल उदय करो ॥ ४७ ॥

राग प्रभाती जे करे प्रह ऊगमते सूर।
भूख्या भोजन संपजे कुरला करे कपूर ॥ १ ॥

अंगुठे अमृत वसे लब्धि तणो भंडार।
जे गुरु गौतम समरिये मनवंछित दातार ॥ २ ॥

पुंडरीक गोयम पमुहा गणवर गुण संपन्न।
प्रह ऊठीने प्रणमता चवदेसें बावन्न ॥ ३ ॥

खंतिखमं गुणकलियं सुविणीयं सव्वलद्धिसंपन्नं।
वीरस्स पढमसीसं गोयमसामिं नमसामि ॥ ४ ॥

सर्वारिष्टप्रणाशाय सर्वाभीष्टार्थदायिने।
सर्वलब्धिनिधानाय गौतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥

॥ समाप्त ॥

आलोयण-स्तवन

बे कर जोड़ी विनवुंजो, सुण स्वामी सुविदित। कूड कपट मूकी करीजी, बात कहुं आपवीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मुझ विनती अवधार ॥ टेर ॥ तुं समरथ त्रिभुवन धणीजी, मुझने दुत्तर तार ॥ कृ० ॥२॥ भवसायर भमतां थकां जी, दीठां दुःख अनन्त। भाग संयोगे भेटीयाजी, भयभंजण भगवन्त ॥ कृ० ॥ ३ ॥ जे दुःख भांजे आपणो जी, तेहने कहिये दुःख। परदुःखभञ्जण तूं सुण्योजी, सेवकने द्यो सुक्ख ॥ कृ० ॥ ४ ॥ आलोयण लीधां विनाजी, जीव रुले संसार। रूपी लक्ष्मणा महासतीजी, एह सुणो अधिकार ॥ कृ० ॥ ५ ॥ दूषमकाले दोहिलोजो, सुधो गुरु संयोग। परमारथ प्रीछे नहींजी, गडरप्रवाही लोग ॥ कृ० ॥ ६ ॥ तिण तुझ आगल आपणांजी, पाप आलोऊं आज। माय बाप आगल बोलतांजी, बालक केही लाज ? ॥ कृ० ॥ ७ ॥ जिन धर्म जिन धर्म सहु कहेजी, थापे अपणी वात। समाचारी जुइ जुइजी, संशय पडयुं मिथ्यात ॥ कृ० ॥८॥ जाण अजाणपणे करीजी, बोल्या उत्सूत्र बोल। रतने काग उड़ावतांजो, हार्यो जन्म निटोल ॥कृ०॥९॥ भगवन्त भाष्यो ते किहांजो, किहां मुझ करणी एह। गज पाखर खर किम सहेजी, सबल विमासण तेह ॥ कृ० ॥१०॥ आप परूप्यो आकरोजी, जाणे लोक महन्त। पिण न करूं परमादीयोजी, मासाहस दृष्टान्त ॥ कृ० ॥११॥ काल

अनन्ते मैं लह्याजी, तीन रतन श्रीकार। विण परमादे पाडियाजी, किहां जई करूं पुकार ॥ कृ० ॥१२॥ जाणुं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं रे विहार। धीरज जीव धरे नहींजी, पोते बहु संसार ॥ कृ० ॥१३॥ सहज पड्यो मुझ आक्रोजी, न गमे रूडी वात। परनिंदा करतां थकांजी, जावे दिन ने रात ॥ कृ० ॥१४॥ किरिया करता दोहिली जी, आलस आणे जीव। धरम पखे धंधे पड्योजी, नरके करस्ये रीव ॥ कृ० ॥१५॥ अणहुंतां गुण को कहेजी, तो हरखुं निशदोस। कोइ हितशिक्षा भली कहेजी, तो मन आणुं रीस ॥ कृ० ॥१६॥ वाद भणी विद्या भणीजी, परञ्जण उपदेश। मन संवेग धर्यो नहींजी, किम संसार तरेश ! ॥ कृ० ॥१७॥ सूत्र-सिद्धान्त वखाणतांजी, सुणतां करमविपाक। खिण एक मनमांहे ऊपजजो, मुझ मरकट वैराग ॥ कृ० ॥१८॥ त्रिविध त्रिविध करो ऊचरुंजी, भगवन्त तुम्ह हजूर। वारवार भांजुं वलीजो, छूटक वारो दूर ॥ कृ० ॥१९॥ आप काज सुख राचतांजी, कीधा आरम्भ कोड़। जयणा न करो जीवनीजी, देव दयापर छाड़ ॥ कृ० ॥२०॥ वचन दोप व्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दण्ड। कूड कपट बहु केलवीजी, व्रत कीधा शतखंड ॥ कृ० ॥२१॥ अणदीधो लीज तृणोजी, तेही अदत्तादान ॥ ते दूषण लागा घणाजी, गिणतां नावै ज्ञान ॥ कृ० ॥२२॥ चंचल जीव रहे नहीं जी, राचे रमणी रूप। काम विटम्बण

सो कहुंजी, ते तूं जाणे स्वरूप ॥ कृ० ॥२३॥ माया ममता में पड्योजी, कीधो अधिको लोभ। परिग्रह मेल्यो कारमोजी, न चढी संयम शोभ ॥ कृ० ॥२४॥ लागा मुझने लालचेजी, रात्रिभोजन दोष। मैं मन मूक्यो माहगोजी, न धर्यो धरम संतोष ॥ कृ० ॥२५॥ इण भव परभव दूहव्याजो, जीव चौराशी लाख। ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडंजी, भगवंत तोरी साख ॥कृ०॥२६॥ करमादान पन्नरे कह्यांजी, प्रगट अठारे पाप। जे मैं कीधां ते सहुजी बगश २ माई बाप ॥कृ० ॥२७॥ मुझ आधार छे एटलाजो सद्दहणा छे शुद्ध। जिनधर्म मोठो जगतमेंजो, जिम साकर ने दूध ॥ कृ०॥२८॥ ऋषभदेव तूं राजीयोजी, सेत्रुंजगिरि सिणगार। पाप आलोया आपणांजी, कर प्रभु मोरी सार ॥कृ०॥२९॥ मर्म एह जिनधर्मनोजी, पाप आलोयां जाय। मनसुं मिच्छामि दुक्कडंजी, देतां दूर पुलाय ।कृ०॥३०॥ तूं गति तूं मति तूं धणीजी, तूं साहिब तूं देव। आण धरूं सिर ताहरीजी, भव भव ताहरी सेव ।कृ०। ३१। (कलश)— इम चढोय सेत्रुंज चरण भेट्या नाभिनंदन जिन तणा, कर जोडी आदि जिणंद आगे पाप आलोया आपणा। श्रीपूज्य जिनचन्द्रसूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणे, गणि सकलचन्द्र सुशिष्य वाचक समयसुंदर गणि भणे ॥३२॥ इति ॥

—०—

समकित सज्झाय

समकित नवि लह्यु रे, एतो रूल्यो चतुर्गति मांहे ॥ स० ॥

त्रसथावर की करुणा कीनी, जीव न एक विराध्यो ।
तीनकाल सामायक करता, शुद्ध उपयोग न साध्यो ॥ १ ॥स०॥

झूठ बोलवा को व्रत लीनो, चोरी को पण त्यागी ॥
व्यवहारादिक महानिपुण भयोपण, अंतर्दृष्टि न जागी ॥२॥ स०॥

ऊर्द्ध भुजा करि ऊंधो लटक्यो, भस्म लगाय धूम गटके ।
जटा जूट सिर मडे जूठो, विन श्रद्धा भव भटके ॥३॥स०॥

निज परनारी त्यागज करके, ब्रह्मचार्य व्रत लीधो ।
स्वर्गादिक याको फल पामी, निज कारज नबि सीधो ॥४॥स०॥

बाह्य क्रिया सब त्याग परिग्रह, द्रव्य लिंगधर लीनो ।
देवचन्द कहे या विध तो हम, बहुत वार कर लीनो ॥स०॥५॥

दादाजी स्तवन

कुशल गुरुदेव के दर्शन, मेरा दिल होत है परसन ।
जगत में आप समो कोई, न देखा नयन भर जोई ॥१॥

विरुद भूमंडले छाजे, फरसता पाप सहु भाजे ।
पूजता सुख संपदा पावे, अचिंती लक्ष्मी घर आवे ॥२॥

एके मुख गुण कहूँ केता, मेरे हिये ज्ञान नहि एता ।
'लाल' की अरज सुन लीजे, चरण की सेव मोहे दीजे ॥३॥